प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्याय दो

संरचना और विषय-वस्तु

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमारा लक्ष्य संसारभर के हजारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसारभर के सैंकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1

आलंकारिक रणनीति 1

घोषित उद्देश्य 2

ऐतिहासिक विवरण 2

सुसमाचार का सन्देश 4

अधिकार पर निर्भरता 4

शब्द 5

कार्य 7

ढाँचागत नमूना 8

सारांशित कथन 8

कलीसियाई विकास 9

विषय सूची 10

यरूशलेम 11

यहूदिया और सामरिया 12

पृथ्वी के छोर तक 13

फीनीके, कुप्रुस और अन्ताकिया 13

कुप्रुस, फ्रूगिया और गलातिया 14

एशिया, मकिदुनिया, और अखाया 14

रोम 15

आधुनिक उपयोग 16

साहित्यिक चरित्र 16

चयनित 16

प्रासंगिक 17

अस्पष्ट 17

असंगतियाँ 20

विभिन्न समय 20

विभिन्न परिस्थितियाँ 21

निरन्तरता 22

एक ही परमेश्वर 22

एक ही उद्देश्य 22

एक ही सुसमाचार 23

सारांश 24

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्याय दो

संरचना और विषय-वस्तु

परिचय

एक शिक्षक होने के नाते, मुझे कभी कभी संसार के कई देशों में यात्रा करने का अवसर प्राप्त होता है। प्रत्येक यात्रा से पहले, मैं सदैव दो महत्वपूर्ण बातों को समझना सुनिश्चित करता हूँ। मुझे यह जानने की आवश्यकता है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। और दूसरा, मुझे यह कैसे पता चलेगा कि मैं एक स्थान से दूसरे स्थान कैसे जा रहा हूँ। क्या मुझे एक हवाई जहाज ले जाएगा? क्या मुझे एक बस पकड़नी पड़ेगी? या किसी अन्य तरह के परिवहन का उपयोग करना होगा? ठीक है, कुछ इसी तरह का सच तब सिद्ध होता है जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं। यह हमारी सहायता करती है कि कहानी किस दिशा की ओर बढ़ रही है और किस तरह की साहित्यिक तकनीकों या रणनीतियों को लूका हमें हमारे गन्तव्य तक पहुँचने के लिए मार्गदर्शन में उपयोग करता है।

हम प्रेरितों के काम की पुस्तक की हमारी श्रृंखला के इस दूसरे अध्याय में हैं। इस श्रृंखला में, हम आरम्भिक कलीसिया के विवरण की खोजबीन करेंगे जिसमें यीशु की सेवकाई को जारी रखा गया है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "संरचना और विषय-वस्तु" के नाम से दिया है क्योंकि हम उन तरीकों को देखेंगे जिनमें लूका ने इसकी सामग्री को, और सन्देश को सिखाने की चाहत से संगठित किया है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक की संरचना और विषय-वस्तु के हमारे अन्वेषण को हम तीन भागों में विभाजित करेंगे। सबसे पहिले, हम इस पुस्तक की आलंकारिक रणनीति की जाँच, इस बात की ओर देखते हुए करेंगे कि कैसे लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखता है जो कि हमारे द्वारा इस पुस्तक के अनुवाद किए जाने के तरीके को प्रभावित करेगा। दूसरा, हम पुस्तक की विषय-वस्तु की जाँच इसकी सामग्री की व्यवस्था को देखते हुए और यह ध्यान देते हुए करेंगे कि इसे पहली शताब्दी में कैसे समझा गया होगा । और तीसरा, हम लूका के प्राचीन संदेश को हमारे दिनों में यह कैसे आधिकारिक तौर पर बात करता है, के ऊपर ध्यान देते हुए इस पुस्तक के [आधुनिक उपयोग], के लिए एक नमूने का सुझाव देंगे। आइए सबसे पहले प्रेरितों के काम की पुस्तक की आलंकारिक रणनीति पर नजर डालते हैं।

आलंकारिक रणनीति

जब भी कभी हम बाइबल की एक पुस्तक को पढ़ते हैं, तो यह समझना महत्वपूर्ण हो जाता है कि कैसे इसका लेखक उसके पाठकों को उसके दृष्टिकोण के बिन्दुओं के लिए सम्मतपूर्ण तरीके के साथ उन्हें परिचित बनाता है। हमें इस तरह के प्रश्नों को पूछना चाहिए: क्यों लेखक ने इस पुस्तक को लिखा? कौन से अधिकारिक लेखों का उसने अपने दृष्टिकोण को स्थापित करने के लिए प्रयोग किया है? कैसे उसने अपने पाठकों को उचित निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए मार्गदर्शन देने के लिए अपनी पुस्तक की रूपरेखा बनाई है? इन प्रश्नों का उत्तर कई तरह की अन्तर्दृष्टि को उत्पन्न करता है, जिसके कारण हमें इन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हम लूका की आलंकारिक रणनीति के तीन पहलुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। पहला हम इसके घोषित उद्देश्य के बारे में बात करेंगें। दूसरा, हमें इसके अधिकार पर निर्भरता का उल्लेख करेंगे। और तीसरा, हम इसके कुछ ढाँचागत नमूनों के बारे में बात करेंगें जिन्हें इस पूरी पुस्तक में उपयोग किया गया है। आइए प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखने के लूका के घोषित उद्देश्य की जाँच से आरम्भ करें।

घोषित उद्देश्य

जब लोग महत्वपूर्ण लम्बाई और जटिलता से साहित्य को लिखते हैं, तो वे सामान्य तौर पर कई इरादों और उद्देश्यों के साथ लिखते हैं। और यह लूका के साथ भी सत्य है जिसने दो-संस्करणों में अर्थात् लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक के साहित्य को लिखा। उसने आशा की कि उसका लेखन कार्य थियुफिलुस और कलीसिया को कई विभिन्न तरीकों से प्रभावित करेगा। इस लिए हमें उसके उद्देश्यों को सामान्य से कम नहीं समझने के लिए सावधान रहना चाहिए। परन्तु फिर भी, लूका ने स्पष्ट कहा है कि लेखन कार्य के लिए उसके पास एक उद्देश्य था।

जैसा कि हम देखेंगे कि, लूका कहता है कि उसके पास दोहरा उद्देश्य था जब उसने इसे लिखा। एक ओर, लूका ने यह घोषित किया कि उसके मन में पहली शताब्दी की कलीसिया के ऐतिहासिक विवरण को लिखने का इरादा था, एक सच्चे और विश्वसनीय इतिहास को लिखने की एक इच्छा थी। और दूसरी तरफ, उसने यह घोषणा की कि उसके मन में कुछ विशेष महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक इरादे थे: सुसमाचार के सन्देश की विशेषता और सत्यता को प्रमाणित और संचारित करने की एक इच्छा थी। हम लूका के दोहरे उद्देश्य के दोनों पहलुओं को, सच्चे ऐतिहासिक विवरण पर उसके इरादे के ऊपर ध्यान देने के द्वारा आरम्भ करेंगे।

ऐतिहासिक विवरण

लूका 1:1-3 के सुसमाचार में अपनी प्रस्तावना में, लूका ने यह इंगित किया है वह आरम्भ की कलीसिया का इतिहास लिखने के लिए बहुत ज्यादा उत्सुक था। सुनिए वहाँ पर उसके शब्दों को:

> बहुतों ने उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है, जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे, हम तक पहुँचाया। इस लिए, हे श्रीमान् थियुफिलुस, मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठाक जाँच करके उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूँ (लूका 1:1-3)।

इस संदर्भ में लूका की चिन्ता सच्चे इतिहास को लिखने में कई अर्थों से स्पष्ट है। उसका यह कहना कि, "उन बातों का जो हमारे बीच में बीती हैं," का अर्थ यह है कि, वे ऐतिहासिक घटनायें जो घटित हो चुकी हैं। लूका यह भी उल्लेख करता है कि उसने इनके बारे में "प्रत्यक्षदर्शियों" अर्थात् चश्मदीदों से विचार विमर्श किया है और "सावधानी से जाँच करके" इनके विवरणों का वर्णन किया है। साथ ही उसने "क्रमानुसार विवरण" देने में सावधानी का उपयोग किया है ताकि जिस सत्य की वह सूचना दे रहा है वह सच्चाई स्पष्ट रूप से और सही ढँग से संप्रेषित की जाए।

संक्षेप में, लूका का दो-संस्करणों में अर्थात् लूका का सुसमाचार और प्रेरितों को काम की पुस्तक का लेखन कार्य एक सच्चे ऐतिहासिक विवरण को, सुसमाचार में यीशु के जीवन के साथ आरम्भ करता हुआ और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पहली-शताब्दी की कलीसिया में प्रेरितों के काम की पुस्तक में जारी रहते हुए देता है। लूका की चिन्ता सच्चे इतिहास को लिखने के बारे में थी क्योंकि वह बाइबल में दोहराये गए एक मौलिक सिद्धान्त को समझ गया था: परमेश्वर स्वयं को वास्तविक इतिहास के द्वारा स्थान और समय में प्रगट करता है। वह अपने उद्धार और न्याय को लाने के बारे में इतिहास के माध्यम से काम करता है।

दुर्भाग्य से, हाल ही की शताब्दियों में कई महत्वपूर्ण विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि "मुक्ति" और "न्याय" की अवधारणाओं का वास्तविक इतिहास से परस्पर संबंध नहीं हैं। सामान्यत: उन्होंने यह निश्चयपूर्वक कहा है कि परमेश्वर के अलौकिक कार्य इतिहास, वास्तविक स्थान और समय में प्रगट नहीं होते हैं। इसकी बजाय वे यह विश्वास करते हैं कि वास्तविक इतिहास केवल स्वभाविक है, न कि अलौकिक। परिणामस्वरूप, जब आलोचनात्मक धर्मशास्त्री पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के कार्यों के बारे में पढ़ते हैं, तो वे अक्सर इन विवरणों के साथ तथ्यहीन धार्मिक भावनाओं की एक तरह की अभिव्यक्ति के रूप में व्यवहार करते हैं, एक तरह से "धार्मिक कपोलकथा" के रूप में।

परन्तु लूका स्वयं स्पष्ट करता है कि वह कोई धार्मिक कपोलकथा को लिखने की कोशिश नहीं कर रहा था; उसका इरादा वास्तविक इतिहास के विवरण को देने का था। तथ्य तो यह है कि उसने इसे इस तरह से लिखा यह उसके दावे को आसानी से सत्यापित करता या खण्डन करता है। केवल मात्र एक उदाहरण के लिए, लूका ने अपने लेखन कार्य को प्रसिद्ध ऐतिहासिक संदर्भों की सीमाओं के भीतर ही लिखा। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, उदाहरण के लिए, हम इन पुरूषों के नामों को पाते हैं जैसे कि गमलीएल, 5:34 में, गल्लियो 18:12 में, फेलिक्स, 23:26 में और फेस्तुस, 24:27 में, यह सभी प्राचीन यहूदी और रोम के संसार में जाने-पहचाने लोग थे। इन पुरुषों और अन्य ऐतिहासिक विवरण का उल्लेख करके, लूका सम्भवत: अपने पाठकों को स्वतंत्र रूप से अपने शोध की जाँच करने के लिए आसान बनता है। वे अन्यों के साथ इनके बारे में बात कर सकते थे जिन्हें इन लोगों और घटनाओं का ज्ञान था, और कुछ मामलों में वह एक ही विषयों पर दूसरों के लेखन को पढ़ सकता है। यदि लूका का विवरण तथ्य सम्मत नहीं होता तो शंकावादियों को इसका खण्डन करना आसान हो गया होता।

विशेष रूप से 19 वीं शताब्दी के अन्त के बाद से, विद्वानों की एक संख्या ने कई अतिरिक्त बाइबल पाठ और अन्य पुरातात्विक विवरणों के साथ तुलना करके प्रेरितों के काम की पुस्तक की ऐतिहासिक सच्चाई की जाँच की है। इन अध्ययनों में से बहुतों ने कई तरीकों से यह संकेत दिया है कि लूका एक विश्वसनीय इतिहासकार था, लेकिन समय हमें केवल एक जोड़ी विशिष्ट उदाहरण को उल्लेख करने की अनुमति देगा।

पहला, प्रेरितों के काम 28:7 में, लूका ने विशेष ऐतिहासिक शब्दावली के ज्ञान को प्रदर्शित किया है। वहाँ उसने माल्टा द्वीप के प्रधान को "द्वीप मे सबसे पहला व्यक्ति" के रूप में सम्बोधित किया है। इस असामान्य शब्दावली ने सदियों से अनुवादकों को पहेलियों में डाला हुआ है, लेकिन हाल ही के पुरातात्विक अनुसन्धान ने यह प्रगट किया है कि यह वास्तव में उस समय के प्रधान का आधिकारिक पद था।

दूसरा, प्रेरितों के काम की पुस्तक 27:21-26 में मिलता है, जहाँ पर लूका ने पौलुस के जहाज में प्रगट किए गए व्यवहार को इस तरह से वर्णन किया है जो कि उसकी ऐतिहासिक अनुसन्धान को प्रमाणित करते हैं। वहाँ पर लूका लिखता है कि पौलुस ने बड़े तूफान के बीच जहाज के पूरे नाविक दल को प्रोत्साहित किया और सुझाव दिया जो उन्हें रोम ले जा रहे थे। अतीत में कई आलोचनात्मक विद्वानों ने बहस की है कि एक कैदी के रूप में पौलुस के लिए इस तरह से खुले तौर पर बात करना असम्भव रहा होगा। इस कारण, उन्होंने यह सार निकाला कि लूका ने प्रेरित का एक काल्पनिक वीर चित्र उत्पन्न किया था। परन्तु हाल की अनुसन्धान शोध यह दिखाती है कि पहली सदी में समुद्री कानून किसी को भी बात करने के लिए और चालक दल को सलाह देने के लिए अनुमति देता था जब जहाज गंभीर खतरे में होता था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह उदाहरण लूका की इतिहास के तथ्यों के प्रति निष्ठा को प्रदर्शित करते हैं। और उसका इरादा वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं को लिखने का था जो हमें यह स्मरण दिलाए कि परमेश्वर का शाश्वत सत्य किसी तरह जीवन की ठोस वास्तविकताओं से अलग नहीं है। इसकी बजाए, बाइबल के विश्वास में, उद्धार वास्तविक इतिहास के माध्यम से आता है। इस लिए ही लूका एक सच्चे ऐतिहासिक विवरण को लिखने के लिए चिंतित था।

सुसमाचार का सन्देश

लूका के ऐतिहासिक उद्देश्य को अपने मन में रखते हुए, हम लूका के इरादे के दूसरे पहलू का उल्लेख करेंगे: जो कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार के सन्देश की वास्तविकता और सामर्थ्य को संचारित करने का धर्मवैज्ञानिक उद्देश्य था। सुनिए लूका 1:3-4 में दिए गए उसके शब्दों को:

> मुझे यह उचित मालूम हुआ...उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल... ताकि तू यह जान ले कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं (लूका 1:3-4)।

जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं कि, लूका ने प्रेरितो के काम का इतिहास थियुफिलुस और अन्यों ने जो शिक्षा पाई थी उसकी पुष्टि करने के लिए लिखा। इसका अर्थ है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक ठीक ही धर्म शिक्षा की जानकारी देने वाली प्रश्नोत्तरी वाली पुस्तक या उपदेशात्मक इतिहास के रूप में वर्णन की जा सकती है। लूका चाहता था कि थियुफिलुस और अन्य पाठकगण एक विशेष तरह के दृष्टिकोण, विशेष तरह की धर्मवैज्ञानिक प्रतिबद्धताओं, ऐतिहासिक घटनाओं पर कुछ निश्चित धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में विवरण दिया गया है, को अपनाएँ।

जैसा कि हमने पहले के अध्याय में देखा, लूका ने इस संसार और सम्पूर्ण इतिहास को मसीह के प्रभुत्व और राज्य की नजरों से देखा। उसने पुराने नियम की आशा और प्रतिज्ञाओं को यीशु और उसकी कलीसिया में पूरा होते हुए देखा। और वह चाहता था कि थियुफिलुस भी आरम्भ की कलीसिया के इतिहास की घटनाओं को इन्हीं नजरों से देखे, कि कैसे मसीह, परमेश्वर के आत्मा के द्वारा, मसीह में परमेश्वर के राज्य को स्थापित करता और निरन्तर स्थापित कर रहा है। इस लिए, जब हम आज के समय में प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमें सदैव ध्यान रखना है कि लूका केवल सच्चे तथ्यों का ही विवरण नहीं दे रहा था ताकि हम मात्र यह जाने कि बहुत पहले कौन सी घटनायें घटी थीं। इसकी बजाय, वह हमारा ध्यान उन शिक्षाओं की ओर आकर्षित कर रहा था जो कि कलीसिया के लिए मूलभूत थी: अर्थात् पवित्र आत्मा के माध्यम से मसीह के सतत् काम करने के लिए विश्वसनीय गवाह ।

अधिकार पर निर्भरता

लूका के द्वारा घोषित दोहरे उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, हम अब आलंकारिक रणनीति के एक दूसरे पहलू पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं: जो कि अधिकार पर निर्भरता है। लूका ने यह दावा नहीं किया है कि उसने ऐतिहासिक और धर्मवैज्ञानिक सत्यों को स्वयं के अधिकार पर आधारित होकर लिखा है, परन्तु इसकी बजाए उसने मसीह और प्रेरितों के अधिकार पर आधारित हो कर इन्हें लिखा है। इस तरह से, लूका ने सुसमाचार के लिए एक सच्चे गवाह के रूप में कार्य किया।

एक बात प्रेरितों के काम की पुस्तक में आश्चर्य करने वाली है कि इसकी सामग्री उन लोगों के शब्दों और कार्यों से भरी हुई है जो मसीह के प्रत्यक्षदर्शी गवाह थे। जब मसीह का स्वर्गरोहण हुआ, तब उसने उसके

प्रेरितों को उसके गवाहों के रूप में नामित किया और उस पर निर्भर रहते हुए, उन्हें अधिकार दिया कि वे उसके राज्य के कार्य को जारी रखें। उसने समय समय पर उसके संदेश को भी प्रचार करने के लिए भविष्यद्वक्ताओं और कलीसिया के अन्य प्रमुख अगुवों को सशक्त किया। और जैसा लूका ने थियुफिलुस और व्यापक कलीसिया को अपने दृष्टिकोण के पालन किए जाने के लिए सहमत किया, वह समय समय पर आरम्भ की कलीसिया के अगुवों की ओर मुड़ा, विशेष रूप से प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की ओर, ताकि वह उन पर अपने दृष्टिकोण को प्रगट करे और उन्हें इसके लिए अधिकृत करे।

और अधिक विस्तार में अधिकार पर लूका की निर्भरता का पता लगाने के लिए, हम दो विषयों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। सबसे पहले, हम लूका के उन तरीकों पर ध्यान देंगे जिनमें उसने आधिकारिक शब्द को प्रयोग किया है। और दूसरा, हम आधिकारिक कार्यों के लिए उसके संदर्भ को देखने के द्वारा इन पर विचार करेंगे। आइए लूका का शब्दों के ऊपर जोर दिए जाने से आरम्भ करें जिन्होंने कलीसिया में अधिकार को संचालित किया।

शब्द

जैसा कि हमने पहले के अध्याय में उल्लेख किया है, लूका एक प्रेरित नहीं था। हो सकता है कि वह मसीह में उसके स्वर्गारोहण के बाद विश्वास में आया हो। पौलुस के साथ उसकी यात्रा में और बिना यात्रा के, लूका ने यीशु और प्रेरितों की सेवकाई की जाँच की, और प्रभु के चुने हुए प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही का विवरण दिया।

अब, एक अर्थ में, मसीह के सभी अनुयायी उसके गवाह हैं। परन्तु जब कलीसिया स्थापित की जा रही थी, तब यीशु ने प्रेरितों को उसके अचूक गवाह होने के लिए अधिकृत किया था। वे ही ऐसे लोग थे जिन्हें उसकी इस पृथ्वी पर अनुपस्थित होने के बदले में स्थायी रूप से, आधिकारिक गवाहों के तौर पर सेवा करने का अधिकार देकर नियुक्त किया गया था। इस के अलावा, प्रभु ने भविष्यद्वक्ताओं और कलीसिया के अन्य आधिकारिक अगुवों को जैसा कि लूका को, सामयिक आधार पर आधिकारिक तौर पर गवाही देने के लिए बुलाहट दी।

लूका ने आधिकारिक शब्दों को प्रस्तुत करने के लिए सबसे विशिष्ठ तरीका भाषणों को वर्णित करने के द्वारा किया। इसकी बजाय कि वह केवल कलीसिया की शिक्षा के ऊपर अपनी टिप्पणी देता, लूका ने नियमित रूप से परमेश्वर के आधिकारिक प्रतिनिधियों को स्वयं बोलने के द्वारा जो कि उनके अपने इतिहास में सक्रिय पात्र थे, की व्यापक तौर पर उनकी धर्म शिक्षा को वर्णित किया है।

सच्चाई तो यह है कि, लगभग तीस प्रतिशत प्रेरितों के काम की सामग्री वाद विवाद, विचार विमर्श, व्यक्तिगत् भाषण, सन्देशों और अन्य तरह के मौखिक प्रस्तुतिकरण से मिलकर संगठित हुई है। हो सकता है कि यह अन्य किसी प्राचीन आख्यान की भाषण सामग्री से बहुत ज्यादा उच्च मात्रा में हो जो हमें इतिहास में मिलती है, ऐसा इस लिए है क्योंकि लूका की निर्भरता का अधिकार उन भाषणों के ऊपर था जिन्हें प्रेरितों ने दिया था। कुल मिलाकर, प्रेरितों के काम की पुस्तक में 24 भाषण मिलते हैं: पतरस की ओर से आठ, पौलुस की ओर से नौ, स्तिफनुस की ओर से एक, याकूब की ओर से एक, और आठ कुछ अन्यों से। और इनमें से विशाल बहुमत प्रेरितों द्वारा दिए हुए भाषणों का है; बाकी ज्यादातर भविष्यद्वक्ताओं और कलीसिया के प्रमुख अगुवों द्वारा मिलकर बना है।

परन्तु यह क्यों महत्वपूर्ण है? प्रेरितों के काम की पुस्तक के भाषण हमें यह बताते हैं कि आरम्भ की कलीसिया के अगुवे कौन थे और उन्होंने कई विषयों को ऊपर क्या सोचा। वे हमें यह दिखाते हैं कि शिष्य मसीह के लिए सताए जाने के लिए तैयार थे। वे मसीह के लिए की गई प्रेरिताई की सेवकाई के गवाह हैं और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसके राज्य के निर्माण के लिए उनके निर्देश को वर्णित करते हैं। इसी के साथ वे लूका के आरम्भ की कलीसिया के इतिहास के बारे में उसके दृष्टिकोणों को भी अधिकृत करते हैं।

अब, उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में कई आलोचनात्मक विद्वान ऐसे हैं जो यह स्वीकार नहीं करते हैं कि लूका ने प्रेरितों की काम की पुस्तक में भाषणों के सच्चे विवरणों को सम्मिलित किया है। और हमें यह स्वीकार करना होगा कि प्राचीन संसार के ऐतिहासिक विवरणों में ऐसे उदाहरण हैं जिनमें भाषण तथ्य पर आधारित नहीं होते थे।

परन्तु आलोचनात्मक और सुसमाचारीय अर्थात् इव्हैंजलिकल विद्वानों की एक संख्या इस ओर संकेत देते हैं कि लूका के दिनों से पहले, मध्य और बाद में कई इतिहासकार ने यह सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत की है कि उनके इतिहास में भाषण वास्तविक भाषणों का सच्चा प्रस्तुतिकरण था। और सच्चाई तो यह है कि, जब हम प्रेरितों के काम में निकटता के साथ भाषणों को देखें, तो हमें निरूत्तर करने वाले प्रमाण मिल जाएंगे कि लूका उन विश्वसनीय इतिहासकारों में से एक था, इस लिए जिन भाषणों को उसने इसमें सम्मिलित किया है वो वास्तव में आधिकारिक प्रेरिताई शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हमें प्राथमिक तौर पर प्रेरितों के काम की पुस्तक में पाए जाने वाले भाषणों के विवरणों में भरोसा है क्योंकि लूका पवित्र आत्मा के द्वारा एक अचूक और आधिकारिक इतिहास लिखने के लिए प्रेरित था। परन्तु फिर भी, ऐसे कम से कम चार अन्य तरीके जिनके द्वारा हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिए गए भाषणों को वास्तविक भाषणों के सही प्रतिनिधित्व के तौर पर देख सकते हैं।

सबसे पहला, भाषणों की अपनी शैली है। प्रेरितों के काम की पुस्तक के अन्य भागों से तुलना करने के द्वारा, वे स्वाभाविक, एक सरल शैली के साथ जान पड़ते हैं। उनमें से कुछ रूखी, अशिक्षित यूनानी भाषा का उपयोग करते हैं। यह दिखाता है कि लूका जो कुछ वास्तव में वक्ताओं ने बोला उसे ही लिखने की चिन्तित था इसकी बजाए कि वह उनके भाषणों को संशोधित करता और इसके साथ कुछ परिवर्तित करता।

दूसरा, भाषण सही तरह से उनके सम्बन्धित संदर्भों में बहुत अच्छी तरह अनुकूल था। प्रत्येक भाषण वक्ता और श्रेताओं के अनुरूप है। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक अध्याय 4 में, पतरस एक लंगड़े व्यक्ति को चंगा करने के बाद यहूदी अगुवों से बात करता है। यद्यपि उसके भाषण में मसीह में उद्धार की घोषणा की गई है, जिसे हम हो सकता है कि ऐसी आशा करें कि मानों इसे लूका ने आविष्कृत किया था, पतरस ने उसके शब्दों को प्रमाणित करने के लिए प्रत्यक्ष में ही चंगाई का उपयोग किया। इसके अलावा, अविश्वासी यहूदी अगुवे पतरस का विरोध नहीं कर सके क्योंकि उन्होंने स्वयं चंगाई को घटित होते हुए देखा था।

बिल्कुल इसी तरह में, पौलुस के भाषण उनके सम्बन्धित संदर्भों को दर्शाते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्याय 13 में उदाहरण के लिए, वह यहूदियों से भिन्न तरह से बात करता है और प्रेरितों के काम के अध्याय 17 में वह पिसिदिया अन्ताकिया में परमेश्वर से डरने वालों की तुलना में स्तोईकी और इपिकूरियों से बहुत ही अलग ढँग से बात करता है।

तीसरा, प्रत्येक भाषण इसके वक्ता के व्यक्तित्व को दर्शाता है। जबकि सामान्य विषयों की आशा जा सकती है, प्रत्येक वक्ता चारित्रिक विशेषताओं को प्रदर्शित करता है। उदाहरण के रूप में, पौलुस की इफिसियों के अगुवों को प्रेरितों के काम के अध्याय 20 में दिए गये भाषण में पौलुस के पत्रों में पाई जाने वाले कई समानताएं है। यह एक ऐसा भाषण है जिसे हम इन पत्रों के लेखक से प्राप्त करने की आशा करते हैं।

चौथा, कुछ स्थानों में, लूका स्पष्ट तौर पर कहता है कि उसने कुछ निश्चित भाषणों को संक्षिप्त किया या उनका सार दिया है। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 2:40 में, वह यह उल्लेख करता है कि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पतरस ने "कई अन्य शब्दों" को भी बोला। यह हममें विश्वास उत्पन्न करता है कि लूका का लक्ष्य सामान्य रूप से वास्तविक भाषण को उनके मूल संदर्भों में पूर्ण प्रस्तुतिकरण के लिए प्रदान करना था।

इन और अन्य कई तरीकों से, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि लूका ने ऐतिहासिक तौर पर सच्चे भाषणों को प्रदान किया। उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक में अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इन्हें न तो आविष्कृत किया और न ही इन्हें गढ़ा। इसकी बजाए, वह अपनी टिप्पणियों और कथा विस्तारण के लिए अपने अधिकार को प्रेरितों के वास्तविक आधिकारिक गवाहों पर आधारित करता है।

आधिकारिक शब्दों को वर्णित करने के अलावा, लूका ने आरम्भ की कलीसिया में प्रेरितों के काम की पुस्तक में अपने धर्मवैज्ञानिक सन्देश को अवगत कराने के लिए आधिकारिक कार्यों के ऊपर भी निर्भर किया।

कार्य

पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को सशक्त किया – और कई बार आरम्भ की कलीसिया में भविष्यद्वक्ताओं और अन्य मुख्य अगुवों - को कई आश्चर्यजनक तरीकों से जिसने उनके सुसमाचार संदेश को मान्यता दी। आश्चर्यकर्मों के द्वारा, चंगाई के लिए नाटकीय तौर पर आत्मिक वरदान के द्वारा मृतकों को जिलाने के द्वारा, पवित्र आत्मा ने यह गवाही दी कि प्रेरित मसीह के आधिकारिक प्रतिनिधि थे।

प्रेरितों के काम 13:7-12 पर ध्यान दें, जहाँ पौलुस की सेवकाई को पाफुस के राज्यपाल के सामने मान्यता मिली। सुनिए लूका के वहाँ दिए गए इस विवरण को:

> वह हाकिम सिरगियुस पौलुस के साथ था, जो कि एक बुद्धिमान पुरूष था। उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। परन्तु इलीमास टोन्हें ने...उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास करने से रोकना चाहा। तब...पौलुस ने, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा और कहा, "...प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है, और तू कुछ समय तक अन्धा रहेगा और सूर्य को न देखेगा।" तब तुरन्त धुंधलापन और अन्धेरा उस पर छा गया और वह इधर उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़ के ले चले। तब हाकिम ने जो कुछ हुआ था उसे देखकर प्रभु के उपदेश पर विश्वास किया (प्रेरितों के काम 13:7-12)।

जब इलीमास ने सुसमाचार में बाधा उत्पन्न करने की कोशिश की, तो पवित्र आत्मा ने पौलुस के द्वारा उसे अन्धा कर दिया। और पौलुस की शिक्षाओं और कार्यों ने राज्यपाल को सहमत कर लिया कि उसके द्वारा प्रचार किया हुआ सुसमाचार सच्चा था।

लूका ने आधिकारिक शब्दों और कार्यों को वर्णित किया ताकि उसके पाठक उसके द्वारा लिखे हुए लेखन की सत्यता से सहमत हो जाएँ। वह चाहता था कि उसके पाठक यह देखें कि प्रेरित ही प्रभु यीशु की ओर से अधिकृत किए गए थे, और यह कि सभी स्थानों की कलीसिया और पीढियाँ मसीह पर निर्भरता रखते हुए परमेश्वर के राज्य के निर्माण को निरन्तर जारी रखते हुए उनकी गवाही का पालन करने के लिए बाध्य रहें।

अब क्योंकि हमने लूका के घोषित उद्देश्य और अधिकार पर निर्भरता को देख लिया है, इस लिए हम लूका की आलंकारिक रणनीति के तीसरे आयाम को देखने के लिए तैयार हैं: जो ढाँचागत नमूने से है जिसे लूका ने प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में प्रयोग किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

ढाँचागत नमूना

प्रेरितों के काम की पुस्तक कई तरह से ढाँचागत नमूनों को प्रदर्शित करती है, परन्तु समय की कमी के कारण हम हमारे ध्यान को प्रेरितों के काम की पुस्तक के ढाँचे के दो तथ्यों के ऊपर केन्द्रित करेंगे। सबसे पहले, हम दुहराए गए सारांशित कथनों के मुख्य नमूनों की खोजबीन करेंगे। दूसरा, हम कलीसियाई विकास के नमूनों को देखेंगे जो कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रगट होते हैं। आइए लूका द्वारा जिस सारांशित कथनों का प्रयोग किया गया उनके साथ आरम्भ करें।

सारांशित कथन

बाइबल के लेखक विभिन्न स्तरों पर अपनी उपस्थिति को कथा में दर्शाने के लिए जाने जाते हैं। कई बार, सभी तरह के व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, वे एक कहानी की कारवाई के पीछे स्वयं को छिपा लेते हैं। अन्य समयों में, वे उनके विवरण में स्पष्ट टिप्पणी करने के लिए आगे कदम बढ़ा देते हैं कि क्या होगा। हम इस बाद वाली तकनीक को ग्रंथकार की टिप्पणियों के रूप में लेते हैं। लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में ऐसी कई ग्रंथकारिक टिप्पणियों को किया है। उसने पृष्ठभूमि की जानकारी दी है, पात्रों के हृदयों के इरादों को प्रकाशित किया है, समयावधि का विवरण और इसी तरह की अन्य बातों को दिया है। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि वह यह सुनिश्चित कर सके कि उसका संदेश स्पष्ट और ईमानदारी से प्रस्तुत किया गया है। वह अक्सर अपनी पुस्तक में घटनाओं पर टिप्पणी सारांशित कथनों के माध्यम से करता है।

बहुत सारे पाठकों ने यह ध्यान दिया है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक सुसमाचार की प्रगति को यरूशलेम से आगे की ओर करती है। और कई स्थानों पर समय समय पर, लूका ने उन बिन्दुओं पर घटनाओं को सारांशित करने के लिए स्वयं को रोका है। हम इस बात की पता लगाएंगे कि लूका ने कैसे उसके इतिहास में छह समयावधियों के लिए सारांशित कथनों के लिए प्रयोग किया है: यरूशलेम में, यहूदिया और सामरिया में सुसमाचार की सफलता; सामरिया से सीरिया अन्ताकिया तक; साइप्रस, फ्रूगिया और गलातिया में; एशिया, मकिदुनिया और अखाया में; और यरूशलेम से रोम की ओर।

उदाहरण के लिए देखें, प्रेरितों के काम 5:42 को जहाँ लूका ने कलीसिया कि सफलता और उसके कार्यों को इन शब्दों के साथ सार दिया है:

> वे प्रतिदिन मन्दिर में और घर घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है न रूके (प्रेरितों के काम 5:42)।

इस तरह के सारांशित कथन को लूका निरन्तर प्रेरितों के काम की पुस्तक में देता चला जाता है जो सुसमाचार की सफलता से भरी हुई अवस्थाओं और कलीसिया की प्रगति के बारे में मुख्य अंश प्रदान करती हैं। सुनिए उसकी प्रेरितों के काम 28:30-31 में की गई टिप्पणी को:

> [पौलुस] पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा (प्रेरितों के काम 28:30-31 हिन्दी पुन: संपादित अनुवाद)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि लूका ने सारांशित टिप्पणियों के द्वारा उसके इतिहास के कुछ निश्चित बिन्दुओं की ओर हमारे ध्यान को आर्कषित किया है, हमें अब कलीसिया की प्रगति के उस नमूने को देखना चाहिए जो उसकी सारांशित टिप्पणियों के बीच में प्रगट होते हैं।

कलीसियाई विकास

जब लूका कलीसिया के विकास के बारे में विवरण देता है तो वह नियमित रूप से दो जोड़ी गतिशील शक्तियों के बारे में उल्लेख करता है। एक तरफ तो, वह कलीसिया के आन्तरिक विकास और तनाव के बारे में लिखता है। और दूसरी तरफ, वह कलीसिया के बाह्य विकास और कलीसिया को बाहर से आने वाले विरोध के बारे में लिखता है। हम इस पाठ में बाद में इस पद्धति का वर्णन करेंगे, अभी तक हम बस केवल उन्हीं बातों का विवरण देंगे जिनका हम अर्थ जानते हैं।

आन्तरिक विकास, शब्दावली से हमारा संकेत मसीही समुदाय के बीच में सुसमाचार के सकारात्मक प्रभाव से है। हम ऐसा कह सकते हैं कि यह व्यक्तिगत् और पूरी कलीसिया के रूप में इनकी आध्यात्मिक परिपक्वता को आगे बढ़ाने के लिए गुणात्मक विकास का एक रूप था। और शब्द "तनाव," से हमारे मन में समस्याओं, प्रश्नों, विवादों और कलीसिया के बीच में प्रगट होने वाले संघर्षों से है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका नियमित रूप से आन्तरिक विकास और तनाव के बीच एक पारस्परिक सम्बन्ध है, को प्रदर्शित करता है। आन्तरिक विकास ने तनाव का नेतृत्व किया, और तनाव ने आन्तरिक विकास का नेतृत्व किया।

लूका के कलीसियाई विकास के ढाँचागत नमूने में दूसरी जोड़ी के तत्वों में बाह्य विकास और विरोध है। "बाह्य विकास," के द्वारा, हमारे मन में कलीसिया में गुणात्मक विकास नए सदस्यों को जोड़कर होने से हुआ। विकास का यह रूप मात्रात्मक था। और शब्द "विरोध" से हम इस तथ्य की ओर संकेत कर रहे हैं कि संघर्ष नियमित रूप से कलीसिया और अविश्वासी संसार के बीच में उठ खड़े हुए जब अविश्वासियों ने सुसमाचार के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया प्रगट की। एक बार फिर से, प्रेरितों के काम की पुस्तक में दो विचारों के बीच एक पारस्परिक सम्बन्ध है। बाहरी विकास ने कभी कभी विरोध को नेतृत्व दिया और विरोध ने समय पर बाहरी विकास को नेतृत्व दिया।

इसके अलावा लूका ने अक्सर यह प्रदर्शित किया कि इन दोनों जोड़ो के में बीच में एक पारस्परिक सम्बन्ध है, एक तरफ तो आन्तरिक विकास और तनाव है और दूसरी तरफ बाह्य विकास और विरोध है। दूसरे शब्दों में, लूका नियमित रूप से आन्तरिक विकास और तनाव का संकेत करता है कि इससे बाह्य विकास और विरोध उत्पन्न होता है, और यह बाह्य विकास और विरोध आन्तरिक विकास और तनाव का कारण होता है। जैसा कि हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, कि कलीसियाई विकास के नमूने नियमित रूप से इतने ज्यादा बार प्रगट होते हैं कि ये प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए वैचारिक ढाँचे या कंकाल की तरह कार्य करते हैं।

जिस सार को लूका ने इसकी पूरी पुस्तक में व्याख्या दी है वह यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का प्रत्येक मुख्य खण्ड सुसमाचार के विकास को दर्शाता है जब यह आरम्भ की कलीसिया की गवाही के द्वारा फैलता चला गया। और सिर्फ कल्पना कीजिए की इन कथनों का थियुफिलुस और अन्य जो लूका की पुस्तक को पढ़ते हैं, पर कितना प्रभाव पड़ा होगा। उन्होंने प्रत्येक स्थान पर विश्वासियों को उत्साहित किया होगा कि भले ही कितना ज्यादा तनाव या कितना ज्यादा भयानक विरोध क्यों न हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है, परमेश्वर सदैव कलीसिया के आन्तरिक और बाह्य विकास के लिए सुसमाचार के माध्यम से काम कर रहा है। उनका झुकाव इस ओर हुआ होगा कि आरम्भ के विश्वासीयों ने सारे इतिहास को इस दृष्टिकोण से पढ़ा होगा और यह सुनिश्चित किया होगा कि यदि वे प्रभु और उद्धारकर्ता के प्रति विश्वासयोग्य गवाह बने रहे,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तो वे उनके दिनों में भी सुसमाचार के विकास को देखेंगे, भले ही वहाँ पर आन्तरिक और बाह्य समस्याएँ क्यों न हों।

विषय सूची

लूका की आलंकारिक रणनीति के कुछ केन्द्रीय आयामों को ध्यान में रखते हुए, अब हम हमारे दूसरे विषय की ओर मुड़ते हैं: प्रेरितों के काम की पुस्तक की विषय सूची की ओर। कई ऐसे तरीके हैं जिनके द्वारा इस पुस्तक की सामग्री को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। हम उस तरीके पर ध्यान केन्द्रित करेंगे जिसके द्वारा लूका ने कलीसियाई विकास के बारे में व्याख्या पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की आंशिक प्रकटीकरण के रूप में किया है।

लूका रचित दो संस्करणीय लेखन कार्य अर्थात् लूका का सुसमाचार और प्रेरितों का काम व्याख्या करता है कि कैसे यीशु परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से लाया और उसका निर्माण करने लगा। उसके सुसमाचार में, लूका ने उन नीवों के बारे में विवरण दिया है जिन्हें यीशु ने उसकी पार्थिव सेवकाई के मध्य में डाला था। और प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका यह व्याख्या करता है कि कैसे यीशु ने पवित्र आत्मा को प्रेरितों को सशक्त करने के लिए उन पर और कलीसिया पर उसके राज्य के निर्माण के कार्य को निरन्तर करने के लिए उण्डेल दिया। इस तरह से, परमेश्वर के राज्य की कहानी लूका के दो संस्करणों में एक व्यापक कहानी है। इस लिए, जैसा कि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक की विषय सूची का पता लगाते हैं, हम राज्य के निरन्तर विस्तार को प्रेरितों के नेतृत्व में चलते रहने के ऊपर विशेष ध्यान देंगे।

जब यीशु ने प्रेरितों के काम 1:8 में प्रेरितों को अधिकृत किया, तो उसने उन्हें उसके गवाह होने का निर्देश दिया, कि वे सबसे पहले यरूशलेम में सुसमाचार की घोषणा करें और फिर बाकी के संसार में इसे फैला दें। सुनिए एक बार फिर से प्रेरितों के काम 1:8 में प्रेरितों को यीशु के कहे हुए शब्दों को:

> परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सारे सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों के काम 1:8)।

यहाँ यीशु ने कलीसिया के द्वारा सुसमाचार की गवाह के लिए एक भौगोलिक रणनीति को उन्हें दिया। पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ्य पाए हुए, प्रेरित यरूशलेम में गवाही देने लगे, और फिर सुसमाचार को यहूदिया और सामरिया में, और अन्ततः पृथ्वी की छोर तक ले गए, वे जहाँ कहीं गए वहाँ सुसमाचार का विस्तार किया।

कई विद्वानों ने यह अवलोकन किया है कि लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को यीशु की भौगोलिक गवाही के विस्तार के लिए दी गई बुलाहट के चारों ओर संगठित किया है। और हम उसके इस नमूने का अनुसरण करेंगे जब हम उसके लेखन कार्य का सर्वेक्षण करते हैं। हम सबसे पहले उस तरीके को देखेंगे जिसमें लूका ने यह विवरण दिया है कि सुसमाचार यरूशलेम में प्रेरितों के काम 1:1-8:4 में विकास किया। दूसरा, हम राज्य के विस्तार को यहूदिया और सामरिया में 8:5-9:31 होते हुआ देखेंगे। और तीसरा, हम यह ध्यान देंगे कि किस तरह से कलीसिया ने पृथ्वी की छोर तक 9:32-28:31 में सुसमाचार को फैला दिया। क्योंकि तीसरा खण्ड अत्यन्त लम्बा है, इस लिए हम इस पर ज्यादा ध्यान, लूका के द्वारा सारांशित कथनों के द्वारा विकास

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

की चार अवस्थाओं के सुझाव पर ध्यान केन्द्रित करते हुए देंगे जिन्हें हमने पहले ही देख लिया है: सबसे पहले 9:32 -12:25 में फीनीके, कुप्रुस और अन्ताकिया, दूसरा, 13:1-15:35 में कुप्रुस, फ्रूगिया और गलातिया; तीसरा, 15:36-21:16 में एशिया, मकिदुनिया, और अखाया में; और चौथा, 21:17 से लेकर 28-31 तक चलता हुआ रोम तक।

हम इनमें से प्रत्येक खण्ड को विस्तार सहित, आन्तरिक विकास और तनाव और बाह्य विकास और विरोध के नमूनों को देखते हुए ध्यान केन्द्रित करेंगे जिनके बारे में हमने पहले विवरण दे दिया है। आइए हम जिस तरीके से यरूशलेम में राज्य प्रेरितों के काम 1:1-8:4 में प्रेरितों की गवाही के द्वारा सुसमाचार के द्वारा स्थापित हुआ से आरम्भ करे।

यरूशलेम

यरूशलेम प्राचीन इस्राएल की राजधानी थी, जो कि पुराने नियम में परमेश्वर का विशेष राष्ट्र था। यरूशलेम लूका के लेखन कार्य में प्रारम्भिक बिंदु था क्योंकि इसने सम्पूर्ण पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य में और यीशु की सेवकाई में भी केन्द्रीय भूमिका को अदा किया था। इसके अलावा, लूका ने यरूशलेम की घटनाओं को प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई स्थानों पर लिखा था, जो कि नियमित रूप से प्रेरितों के द्वारा सुसमाचार को नई भूमि में फैलाने के बारे में प्रगट करते हैं, जो कि अभी भी इसी विशेष शहर में निहित था।

लूका ने विवरण दिया कि राज्य का विकास यरूशलेम में सुसमाचार के द्वारा चार मुख्य समूहों में हुआ: सबसे पहला आत्मा का पूर्वानुमान और उण्डेले जाने जो कि प्रेरितों के काम अध्याय 1-2 में मिलता है, पतरस का मन्दिर में दिया हुआ सन्देश और बाद में आने वाला सताव प्रेरितों के काम अध्याय 3-4 में मिलता है; तीसरा, हनन्याह और सफीरा की कहानी और उसके बाद आने वाले सताव जो कि प्रेरितों के काम अध्याय 5 में मिलता है; और चौथा, सेवकों का चुनाव और इसके बादे आने वाला सताव जो कि प्रेरितों के काम अध्याय 6:1-8:4 में मिलता है।

उदाहरण के द्वारा, आन्तरिक विकास कई जानी-पहचानी घटनाओं में प्रकट होता है, जो कि यरूशलेम में घटित हुई, जैसा कि:

- प्रेरितों के काम अध्याय 1 में प्रेरितों का अधिकृत किया जाना
- प्रेरितों के काम अध्याय 2 में पवित्र आत्मा का पिन्तेकुस्त के दिन उण्डेला जाना
- यरूशलेम में आश्चर्यकर्म का अनुभव, विशेष कर पतरस के द्वारा, प्रेरितों के काम अध्याय 3, 4 और 5 में

इसी समय, हम कई तरह से मसीही समुदाय में तनाव को देखते हैं, जिसमें निम्न सम्मिलित है:

- प्रेरितों के काम अध्याय 1 में वह प्रश्न कि कौन बारहवाँ प्रेरित बनेगा
- हनन्याह और सफीरा के द्वारा पैसे के लिए बोला गया झूठ जिसे उन्होंने प्रेरितों के काम अध्याय 5 में दान में दिया था; और
- प्रेरितों के काम अध्याय 6 में यूनानी विधवाओं के साथ किया जाने वाला पक्षपात

इससे भी आगे, लूका की यरूशलेम में सुसमाचार के लिए दी गई गवाही भी बाह्य विकास और विरोध के नमूने का उपयोग करती है, उदाहरण के लिए:

- पिन्तेकुस्त के दिन में, लगभग 3,000 लोग प्रेरितों के काम अध्याय 2 में कलीसिया में जोड़े गए

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

- कलीसिया की सदस्यता लगभग 5,000 तक बढ़ गई जब यूहन्ना और पतरस को प्रेरितों के काम अध्याय 4 में बन्दीगृह में डाल दिया गया, और
- कई यहूदी याजक प्रेरितों के काम अध्याय 6 में कलीसिया में जुड़ गए।

परन्तु फिर भी, जैसा कि हमने पहले ही सुझाव दिया है, ये बाह्य विकास अक्सर अविश्वासी संसार के कारण शक्तिशाली विरोध के द्वारा आया, जैसे कि:

- प्रेरितों के काम अध्याय 5 में पतरस और यूहन्ना का पकड़ा जाना और मारा जाना
- प्रेरितों के काम अध्याय 7 में स्तिफनुस का शहीद होना; और
- प्रेरितों का काम अध्याय 8 में यरूशलेम से कलीसिया पर सताव आने के बाद विखर जाना

हो सकता है कि आन्तरिक तनाव और बाह्य विरोध के कारण नई कलीसिया को हतोत्साहित होने की हम आशा कर सकते हैं। परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ्य की अधीनता में वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत थी। सुसमाचार की गवाही बड़ी निर्बाध गति के साथ आगे बढ़ती रही, अन्ततः बिना किसी रूकावट के इसका विकास होता रहा।

यहूदिया और सामरिया

प्रेरितों के काम की पुस्तक का दूसरा मुख्य खण्ड प्रेरितों के काम 8:5-9:31 में यहूदिया और सामरिया में कलीसिया की सुसमाचार की गवाही के ऊपर केन्द्रित होता है। यहूदिया और सामरिया का क्षेत्र कच्चे तौर पर पुराने नियम में इस्राएल को दी गई प्रतिज्ञा की हुई भूमि के दक्षिणी और उत्तरी क्षेत्रों के लिए लगभग बराबर थे। यीशु ने स्वयं इन क्षेत्रों में उसके स्वर्गारोहण से पहले सेवकाई की थी। लूका के यहूदिया और सामरिया पर दिए गए ध्यानाकर्षण को कहानियों के दो मुख्य समूहों में बाँटा जा सकता है: प्रेरितों के काम 8:5-40 मे फिलिप्पुस की सेवकाई और प्रेरितों के काम 9:1-31 में पौलुस का मन परिवर्तन।

ये कहानियाँ हमारे ध्यान को कलीसिया के आन्तरिक विकास की ओर आकर्षित करती हैं। उदाहरण के लिए, आन्तरिक विकास निरन्तर जारी रहा जब नए विश्वासी लगातार प्रेरितों के काम अध्याय 8 में पवित्र आत्मा से भरते चले गए, और शाऊल प्रेरितों के काम अध्याय 9 में उसके मन परिवर्तन के बाद प्रेरित बना दिया गया।

अपने ध्यान में इन घटनाओं को रखते हुए, तथापि, कलीसिया के बीच में तनाव का भी निर्माण होने लगा। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 8 में प्रश्नों को किया गया है क्योंकि कुछ विश्वासियों ने अभी तक पवित्र आत्मा को प्राप्त नहीं किया था। शिमौन जादूगर ने प्रेरितों के काम अध्याय 8 में प्रेरितों से पवित्र आत्मा की शक्ति को खरीदने की कोशिश की।

दूसरी तरफ, बाह्य विकास और विरोध का नमूना भी निरन्तर चलता रहा। उदाहरण के लिए, यहूदिया और सामरिया में इन घटनाओं जैसे कि कई नए लोग फिलिप्पुस की सुसमाचारीय सेवकाई के द्वारा और प्रेरितों के काम अध्याय 9 में पौलुस के मन परिवर्तन के द्वारा कलीसिया निरन्तर गुणात्मक तौर पर विकास करती चली गई।

परन्तु फिर भी, यह विकास अविश्वासियों के विरोध के बगैर प्रगट नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, शाऊल ने प्रेरितों के काम अध्याय 9 में उसके मन परिवर्तन से पहले विश्वासियों को सताया, और कुछ यहूदियों ने शाऊल को प्रेरितों के काम अध्याय 9 में उसके मन परिवर्तन के बाद कत्ल करने की कोशिश की।

एक बार फिर से, आन्तरिक तनाव और बाह्य विरोध अन्तत: कलीसिया के विकास में रूकावट बनने में असफल हो गया। इसकी बजाए, पवित्र आत्मा ने इन चुनौतियों को कलीसिया में गुणात्मक विकास और परिपक्वता को लेने के लिए उपयोग किया।

पृथ्वी के छोर तक

प्रेरितों के काम का तीसरा मुख्य खण्ड यह व्याख्या देता है कि कैसे सुसमाचार प्रतिज्ञात् भूमि की सीमाओं से आगे की ओर विस्तार करके, पृथ्वी की छोर तक पहुँच गया, जैसा कि उस समय के संसार को जानकारी थी जैसा कि हमने उल्लेख किया है कि, हम इस खण्ड को ज्यादा विस्तार, 9:32-12:25 में फीनीके, कुप्रुस और अन्ताकिया में सुसमाचार के फैलने से आरम्भ करते हुए देखेंगे।

फीनीके, कुप्रुस और अन्ताकिया

यह खण्ड सुसमाचार प्रचार का यहूदिया और सामरिया से आगे की ओर फैलने के पहले विशेष प्रसार के बारे में बताता है जैसा कि यह फीनीके, कुप्रुस और सीरिया के अन्ताकिया की अन्यजातियों के क्षेत्र में फैल गया। प्रेरितों के काम के इस खण्ड में, हम पतरस की प्रेरितों के काम 9:32-43 में लुद्दा और याफा में, पतरस की अन्यजाति कुरनेलियुस के यहाँ कैसरिया में 10:1-11:18 में की गई सेवकाई के बारे में, सीरिया के अन्ताकिया में 11:19-30 में सुसमाचार के विस्तार के बारे में पढ़ते हैं, और पतरस के आश्चर्यजनक तरीके से यरूशलेम के बन्दीगृह से छुटकारे के बारे में 12:1-25 में पढ़ते हैं।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यहाँ पर भी आन्तरिक विकास और तनाव का नमूना नियमित रूप से कार्य कर रहा है। लूका ने आन्तरिक विकास के कई उदाहरणों का विवरण दिया है। उदाहरण के लिए, अन्यजाति प्रेरितों के काम अध्याय 10 में कलीसिया में लाए गए और कलीसिया प्रेरितों के काम अध्याय 12 में पतरस के आश्चर्यजनक तरीके से छुटकारे को लेकर उत्साहित हो गई थी।

और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, वहाँ पर सम्बन्धित तनाव भी थे। उदाहरण के लिए, काफी सारे यहूदी अन्यजातियों को प्रेरितों के काम अध्याय 11 में कलीसिया की संगति में पूरी तरह से लेने में झिझके और बहुतों ने पुराने नियम के भोजन सम्बन्धी व्यवहारों के प्रतिबन्धों में ढील दिए जाने के कारण प्रेरितों के काम अध्याय 11 में विरोध प्रकट किया।

इस खण्ड में भी, लूका बाह्य विकास और विरोध के नमूने के ऊपर जोर देता है। उदाहरण के लिए, उसने प्रेरितों के काम अध्याय 10 में कुरनेलुयस और कई अन्यजातियों के मन परिवर्तन, और प्रेरितों के काम अध्याय 11 में बरनबास की सफल सुसमाचारीय सेवकाई के माध्यम से बाहरी विकास के लिए लिखा है।

परन्तु यह विकास भी बिना विरोध के नहीं हुआ था। इस सताव में प्रेरितों का काम अध्याय 12 में याकूब की मृत्यु और प्रेरितों के काम अध्याय 12 में पतरस को बन्दीगृह में डाला जाना सम्मिलित है।

परन्तु तनाव और विरोध के बावजूद भी, सुसमाचार की गवाही में अतत: कोई रूकावट प्रकट नहीं हुई। पवित्र आत्मा ने कलीसिया के सुसमाचार और शिष्यत्व के कार्य को आशीषित करना जारी रखा। उसने नस्लीय भेदभावों और सतावों पर विजय को पाया, यहाँ तक कि आश्चर्यजनक तरीके से पतरस को बन्दीगृह से मुक्त कराने के द्वारा। यह बात कोई अर्थ नहीं रखती है कि कैसी भी रूकावटें भले ही इसके मार्ग में क्यों न रख दी गई हो, सुसमाचार निरन्तर आगे की ओर बढ़ता रहा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

कुप्रुस, फ्रूगिया और गलातिया

प्रेरितों के काम की पुस्तक 13:1-15:35 में, लूका चौथे मुख्य खण्ड की ओर मुड़ता है: कुप्रुस, फ्रूगिया और गलातिया में सुमसाचार का प्रसार होना। इस खण्ड में, सुसमाचार यरूशलेम, यहूदिया और सामरिया से आगे की ओर बढ़ता हुआ, एशिया माइनर के पूर्वी क्षेत्रों में फैल गया। प्रेरितों के काम की पुस्तक का यह खण्ड दो मुख्य हिस्सों में विभाजित किया हुआ है: पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा जो कि प्रेरितों के काम 13:1-14:28 में पाई जाती है, और प्रेरितों के काम 15:1-35 में यरूशलेम की महासभा।

उसकी रणनीति को ध्यान में रखते हुए, लूका ने आन्तरिक विकास और तनाव के नमूने को भी इस खण्ड में दिखाया है। उसने ऐसी बातों के द्वारा आन्तरिक विकास की ओर संकेत किया है जैसी कि पौलुस का प्रेरितों के काम अध्याय 14 में गलातियों की कलीसियाओं को और यरूशलेम में महासभा के उस निर्णय को उत्साहित करना जिसमें अन्यजातियों को मसीह में आने के समय खतने की आवश्यकता से मुक्त करना जो कि प्रेरितों के काम अध्याय 15 में पाया जाता है।

लूका ने इस खण्ड में आन्तरिक तनाव का भी उल्लेख किया है, विशेष कर जब उसने अन्यजाति से आए हुए लोगों की व्यावहरिक परेशानियों के बारे में लिखा है। यहूदियों और अन्यजाति विश्वासियों में तनाव खतने और प्रेरितों के काम अथ्याय 15 में यहूदी परम्परा अनुसार भोजन सम्बन्धी कठोरता के नियमों को लेकर उत्पन्न हुई थी।

बाह्य विकास और विरोध के सम्बन्ध में, लूका ने प्रेरितों का काम अध्याय 14 में कई विषयों का उल्लेख किया है, जैसा कि पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के कारण उत्पन्न हुई संख्यात्मक वृद्धि। परन्तु जैसा कि पहले कहा गया है कि, यह वृद्धि शक्तिशाली विरोध के साथ आई। उदाहरण के लिए, पौलुस और बरनबास को यहूदी अविश्वासियों के द्वारा निरन्तर अस्वीकार कर दिया गया विशेष कर प्रेरितों के काम अध्याय 14 में लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया में। परन्तु फिर भी, पवित्र आत्मा निरन्तर कलीसिया को आगे की ओर बढ़ता रहा और उसके लोगों के मार्ग में आने वाली प्रत्येक बाधा पर विजय प्राप्त कर गया। न रूकने वाला सुसमाचार निरन्तर परमेश्वर के उद्देश्यों को स्थापित करता चला गया।

एशिया, मकिदुनिया, और अखाया

प्रेरितों के काम का पाँचवाँ मुख्य खण्ड 15:36- 21:16 तक चलता है, जहाँ पर सुसमाचार की गवाही रोमी प्रान्तों एशिया, मकिदुनिया और अखाया तक फैल गई। प्रेरितों के काम का यह खण्ड पौलुस की दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है, इस समय के मध्य में पौलुस पूर्वी एशिया माइनर में से होता हुआ यात्रा करता है, जैसा कि उसने पहले की थी, परन्तु फिर वह एशिया के पश्चिमी एशिया माइनर के प्रान्त की ओर बढ़ता है, और एजियन सागर को पार करता हुआ मकिदुनिया और अखाया आज के आधुनिक दिन के यूनान के कई शहरों में आता है।

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा का विवरण प्रेरितों के काम 15:36-18:22 में और तीसरी मिशनरी यात्रा का 18:23-21:16 में दिया गया है। इस नमूने में जो कि अब तक अच्छी तरह परिचित हो जाना चाहिए, यह अध्याय आन्तरिक विकास और तनाव के बीच के सम्बन्ध पर जोर डालते हैं। हम यहाँ आन्तरिक विकास के कई उदाहरणों को पाते हैं, जैसा कि अपुल्लोस को अक्विला और प्रिसक्किला को प्रेरितों के काम अध्याय 18 में दिए गए निर्देश और पौलुस ने इफिसुस के यहूदी सभाघर में शिक्षा को और प्रेरितों के काम अध्याय 19 में तुरन्नुस की पाठशाला में दिए गए भाषणों को दिया।

और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, ज्यादा तनाव इसी आन्तरिक विकास के कारण आया। उदाहरण के लिए, पौलुस और बरनबास ने मरकुस के ऊपर बहस की और प्रेरितों के काम अध्याय 15 में उससे अलग हो

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

गया और पौलुस ने कलीसिया को उन कलीसियाई अगुवों से स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए चेतावनी दी जिनके प्रेरितों के काम अध्याय 20 में बुरे उद्देश्य थे।

हम बाह्य विकास और विरोध के बारे में भी पढ़ते हैं. उदाहरण के लिए, हम देखते हैं कि बाह्य विकास कई लोगों के जो पौलुस के प्रचार द्वारा मसीह में आए थे हुआ और उन कलीसियाओं में जो कि प्रेरितों के काम अध्याय 15-21 में दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्रा के बीच में स्थापित की गई थी। परन्तु इसी के साथ हम विरोध को भी देखते हैं जैसे कि गुस्से से भरी हुई भीड़ जिसने पौलुस की हत्या करने की कोशिश की, और यहूदी जेलोती जिन्होंने पौलुस को एक शहर से दूसरे शहर में सताया जो कि हमें प्रेरितों के काम अध्याय 17और 20 में मिलता है। एक बार फिर से, लूका यह दिखाता है कि सुसमाचार प्रभावशाली तरीके से पूरे संसार में फैलता चला गया, परन्तु वे पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से सशक्त किए हुए सुसमाचार के गवाहों को इसके प्रसार करने से नहीं रोक सके।

रोम

अन्त में, लूका की कथा का अन्तिम बड़ा खण्ड प्रेरितों के काम 21:17-28:31 में रोम में सुसमाचार की गवाही पर केन्द्रित है। यह खण्ड पौलुस की यात्रा को यरूशलेम से आरम्भ करता हुआ, और तब उसके बाद उसकी गिरफ्तारी, कारावास और रोम में हस्तान्तरण करने पर केन्द्रित है। इन सामग्रियों को मोटे तौर पर चार बड़े वर्गों में विभाजित किया जा सकता है: पौलुस की प्रेरितों के काम 21:17-23:11 में यरूशलेम में अन्तिम गवाही, पौलुस का 23:12-26:32 में कारावास; उसकी रोम के लिए 27:1-28:14 में कठिन यात्रा, और अन्त में 28:15-31 में रोम में उसकी गवाह।

जैसा कि हम आशा करते हैं कि ये अध्याय आन्तरिक विकास और तनाव से परिचित नमूने को अपने में सम्मिलित करते हैं। हम आन्तरिक विकास के लिए कई प्रमाणों को देखते हैं जिनमें ऐसी बातें सम्मिलित हैं जैसा कि यहूदी विश्वासियों ने जिस आनन्द को यरूशलेम में अनुभव किया जब उन्होंने यह सुना कि प्रेरितों के काम अध्याय 21 में बहुत सारे अन्यजाति विश्वास में आ रहे थे, और प्रेरितों के काम अध्याय 22 में पौलुस और अन्यों के दुख उठाने और यहाँ तक कि सुसमाचार के लिए मरने के लिए भी तैयार हैं।

परन्तु हम यह भी देखते हैं कि आन्तरिक विकास तनाव के साथ भी आया, जैसा कि एक अफवाह यह थी कि पौलुस यहूदियों को यह शिक्षा दे रहा था कि वे अपनी परम्पराओं को त्याग दें जो कि प्रेरितों के काम अध्याय 21 में मिलता है और परिणामस्वरूप उसकी उपस्थिति ने प्रेरितों के काम अध्याय 21 में यरूशलेम की कलीसिया में तनाव को उत्पन्न कर दिया।

हम बाह्य विकास और विरोध के नमूने को भी पाते हैं। लूका ने यह विवरण दिया है कि कलीसिया ने इस अवधि में बाहरी विकास में उल्लेखनीय प्रगति की। उदाहरण के लिए, पौलुस प्रेरितों के काम अध्याय 23, 24, 26, 28 में कई उच्च पद वाले अधिकारियों को सुसमाचार प्रस्तुत करता है, और उसने प्रेरितों के काम अध्याय 28 में रोम में बिना किसी रूकावट के प्रचार के कार्य को किया। परन्तु लूका यह भी संकेत देता है कि इस विकास के साथ शक्तिशाली विरोध भी आया, जिसमें पौलुस को पकड़ लिया गया और रोमी सरकार द्वारा प्रेरितों के काम अध्याय 24 में चार साल के लिए और प्रेरितों के काम अध्याय 28 में रोम के कारावास में डाल दिया गया।

प्रेरितों के काम की पुस्तक का प्रत्येक मुख्य खण्ड यह प्रमाणित करता है कि विश्वासयोग्य गवाह सुसमाचार को सुनाने में असफल नहीं हुए। पवित्र आत्मा ने कलीसिया को सशक्त किया कि वह सुसमाचार को यरूशलेम से लेकर रोमी साम्राज्य की राजधानी तक ले जाए। उन आन्तरिक परेशानियों जिन्हें कलीसिया ने

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सहन किया, के बावजूद भी, बिना किसी रूकावट के सुसमाचार कलीसिया में आत्मिक परिपक्वता और सँख्यात्मक विस्तार को लेकर आया जब इसने परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैला दिया।

आधुनिक उपयोग

अब क्योंकि हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक की आलंकारिक रणनीति और विषय सूची का पता लगा लिया है, इस लिए आइए हम अब हमारे तीसरे विषय की ओर मुड़ें: इसके आधुनिक उपयोग के ओर चलने वाले कदम। वे कौन से ऐसे कुछ मुख्य विषय हैं जिनके द्वारा हम हमारे आज के दिनों में प्रेरितों के काम की पुस्तक के सत्यों को अपने पर लागू कर सकते हैं? इस विषय का विस्तार करने के लिए, हम सबसे पहले हमारे ध्यान को प्रेरितों के काम की पुस्तक के साहित्यिक चरित्र के ऊपर, इसके कुछ मुख्य चारित्रिक गुणों के ऊपर ध्यान देते हुए लगाएंगे। दूसरा, हम हमारे आज के दिनों और पहली शताब्दी के बीच की कुछ असंगतियाँ के बारे में बात करेंगे जो कि हमारे इस पुस्तक के आधुनिक उपयोग के ऊपर प्रभाव डालती हैं। और तीसरा, हम आधुनिक दिनों और पहली शताब्दी के बीच की निरन्तरताओं के बारे में पुष्टि करेंगे जो कि हमारे जीवनों में प्रेरितों के काम की पुस्तक के वास्तविक अर्थ से सम्बन्धित होने में हमारी सहायता करती हैं। आइए प्रेरितों के काम की पुस्तक के साहित्यिक चरित्र के ऊपर देखने से आरम्भ करें।

साहित्यिक चरित्र

विभिन्न तरह के साहित्य विभिन्न तरीकों से अपने संवादों को प्रेषित करते हैं। उदाहरण के लिए, हम बाइबल में कई तरह के साहित्यों को पाते हैं। इसमें ऐतिहासिक कहानियाँ, कवितायें, भाषण, दृष्टान्त, कहावतें, व्यवस्था और ऐसी ही और बातें मिलती हैं। और साहित्य की हर तरह की श्रेणी विभिन्न तरीकों से संचारित होती है। यदि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को एक दायित्वपूर्ण तरीके से समझने की आशा करें, तो हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि हम किस तरह के साहित्य की श्रेणी को प्रयोग कर रहे हैं और उन तरीकों को जिसमें यह साहित्य अपने संवादो को संचारित करता है।

ऐसी कई बातें हैं जिन्हें हम साहित्यिक दृष्टिकोण से प्रेरितों के काम की पुस्तक के बारे में कह सकते हैं, परन्तु समय हमें केवल इसकी सबसे अधिक प्रमुख विशेषताओं में से तीन को उजागर करने की अनुमति देगा। सबसे पहले, लूका अपने विवरण में क्या लिखना के बारे में चयनात्मक था। दूसरा, उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक को प्रासंगिक होने के लिए बनाया। और तीसरा, वह अस्पष्ट तरीके से इसकी कई शिक्षाओं को संचारित करता है। आइए सबसे पहले हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के चयनित प्रकृति की सामग्री पर नजर डालें।

चयनित

प्रत्येक इतिहासकार को चयनात्मक होना चाहिए। यहाँ पर बहुत ज्यादा तथ्य, लोग और इस संसार की घटनाएँ हैं जो कि किसी भी मनुष्य के लिए उनके बारे में व्यापक विवरण प्रदान करती हैं। प्रेरितों के काम की घटनाएँ यीशु के स्वर्गारोहण से लेकर पौलुस के रोम के बन्दीगृह में डाल दिए जाने की समयावधि के बीच की हैं। इस समय के मध्य कलीसिया में विशेष तौर पर चौंकाने वाली संख्या में बहुत सारी धटनाएँ घटित हुईं – इतनी सारी कि इनकी गणना नहीं हो सकती है। परन्तु तौभी, लूका ने मात्र 28 उचित छोटे अध्यायों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लिखा है। इस लिए, हम जानते हैं कि उसने केवल एक छोटे से अंश ही की सूचना दी है। परन्तु उसने इन घटनाओं को सम्मिलित करने का निर्धारण कियाः उसने कैसे निर्धारित किया कि किसे छोड़ दिया जाना चाहिएः लूका पवित्र आत्मा से प्रेरित हुआ कि वह इतिहास के थोड़े से हिस्से का चुनाव करे जिसे कि प्रेरितों के द्वारा यीशु के कार्यों को समझना महत्वपूर्ण था, और जो उसके पाठकों को प्रेरितों की कुछ केन्द्रीय शिक्षाओं को अपनाने के लिए सहमत करेगा।

इसलिए, जब हम आधुनिक संसार में प्रेरितों के काम की पुस्तक को लागू करने के तरीकों को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, तो हमें दो बातों को करने की आवश्यकता है। एक तरफ तो, हमें इस सोच की त्रुटि से बचने की जरूरत है कि लूका ने हर इस बात का विवरण दिया जिसे हम उस समय की कलीसिया के इतिहास की समयावधि को जानने के बारे में चाहते थे। ऐसे कई प्रश्न हैं जिन्हें उसने अनुत्तरित छोड़ दिया हैं, इस लिए हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में से हमारी आधुनिक समस्याओं का हर तरह का उत्तर पाने के लिए बचने की जरूरत है।

एक तरफ तो, हमें यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का प्रत्येक विवरण उसके दोहरे उद्देश्य को पूरा करने में हमारी सहायता करता है। इस लिए हमें पुस्तक की प्रत्येक बात को इस प्रकाश में पढ़ने की आवश्यकता है यह कैसे लूका को उसके उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायता करता है। हमें इस तरह के प्रश्नों को निरन्तर करते रहना चाहिए: यह मुझे आरम्भ की कलीसिया के बारे में क्या सिखाता हैः और यह मुझे कौन से धर्म सिद्धान्त अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता हैः

प्रासंगिक

चयनित होने के अलावा, प्रेरितों के काम की पुस्तक का साहित्य प्रासंगिक भी है। ऐसा कहने का अर्थ यह है कि, प्रेरितों के काम की पुस्तक छोटी कहानियों और विवरणों का क्रमश: संग्रह है। जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो ध्यान देने के लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि इसकी प्रत्येक व्यक्तिगत कहानियाँ लूका की समग्र रणनीति और सन्देश के अंश है। प्रत्येक किसी न किसी तरीके से उसके द्वारा थियुफिलुस को मसीह में परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के बारे में शिक्षण के उसके समग्र मिशन के लिए कुछ न कुछ योगदान देती है। इस कारण, यह बड़ा चित्र जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं तो इसके प्रत्येक प्रसंग के लिए पृष्ठभूमि और संदर्भ के रूप में काम करना चाहिए।

परन्तु इसका प्रत्येक प्रसंग भिन्न भी है। प्रत्येक के पास उसके छोटे अंश हैं, उसके छोटे विस्तार हैं जो सुसमाचार के माध्यम से मसीह में परमेश्वर के राज्य का निर्माण जारी रखने के लिए शिक्षा देते हैं। और इसका अर्थ यह है कि जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमें हमारे ध्यानाकर्षण को लूका के व्यापक उद्देश्य को किसी व्यक्तिगत् दृष्टिकोण जिसे वह बता रहा था की परछाई में नहीं आने देना चाहिए। हमें दोनों अर्थात् बड़े और छोटे चित्र पर ध्यान देना चाहिए, यह समझते हुए कि इसका प्रत्येक प्रसंग कैसे विस्तृत उद्देश्य को योगदान देता है, परन्तु, यह भी इसका प्रत्येक प्रसंग कैसे उसके उद्देश्य की व्याख्या की परिभाषा में सहायता करता है।

चयनात्मक और प्रासंगिक होने के साथ साथ, प्रेरितों के काम की पुस्तक की कहानी का ढाँचा भी इस तरह से अस्पष्ट है कि इसकी शैली इसकी बहुत ज्यादा शिक्षाओं को संप्रेषित करती है।

अस्पष्ट

विस्तृत तौर पर कहना, नए नियम में साहित्य की दो मुख्य श्रेणियाँ हैं: कहानी वाले संवाद और तार्किक बहस वाले संवाद। तार्किक बहस वाले संवाद ऐसा साहित्य है जो कि एक तरह से एक बातचीत को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रस्तुत करते हैं, जैसा कि जब एक पुस्तक में एक पात्र ही बोल रहा है, या जब एक लेखक पाठकों से सीधे बात करता है। उदाहरण के लिए, नए नियम की पत्रियाँ मौलिक तौर पर तार्किक बहस वाले संवादों से मिलकर बनी हुई हैं जिनमें एक लेखक जैसे पौलुस अपने पत्र के प्राप्तकर्ताओं से सीधे बात कर रहा है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, कुछ पत्रियों में कथा के टुकड़ों को शामिल किया गया हैं, और हम यहाँ तक कि कभी कभी गीत या कहावतों को इसमें पाते हैं। परन्तु वे अधिकतर तार्किक बहस वाले संवादों से मिलकर बनी हुई हैं। और मुख्य बात जो हम यहाँ तार्किक बहस के संवादों के बारे में कहना चाहते हैं वह यह है कि यह सीधे और स्पष्ट रूप से अपनी अधिकतर शिक्षाओं को संप्रेषित करती हैं। जब पौलुस ने उसके पाठकों को एक पत्र लिखा तो उसने उन्हें सोचने या कुछ करने के लिए लिखा, उसने उन्हें सीधे ही लिखा कि वह उनसे क्या चाहता था।

दूसरी तरफ, कहानी वाले संवाद चारों सुसमाचारों के साहित्य में प्रबल श्रेणी वाले हैं, और इनकी ज्यादा महत्वपूर्ण, प्रेरितों के काम की पुस्तक के इन अध्यायों के लिए है। कहानी वाले संवाद ऐसा साहित्य है जो हमें एक कहानी के बारे में बताते हैं और इसकी शिक्षा को कम सीधे तरीके से प्रदान करते हैं। यह सुनिश्चित है कि, तार्किक बहस वाले संवाद इन पुस्तकों में भी प्रकट होता है, मुख्य रूप से कुछ पात्रों के भाषणों में, परन्तु सुसमाचारों और प्रेरितों के काम की पुस्तक का साहित्य प्रबलता से कहानी वाले संवाद वाला है। और तार्किक बहस वाले संवादों की तरह नहीं, जिनका झुकाव बातों को स्पष्ट तौर पर शिक्षण देने का है, कहानी वाले संवादों का झुकाव अस्पष्ट बातों को शिक्षण देना का है, जो कि पढ़ने वालों को स्वयं ही अपने लिए सबको प्राप्त करने देते हैं। कहानी वाले संवाद पाठकों को सीधे निर्देश नहीं देते हैं, परन्तु वे अधिक चतुराई वाले तरीकों से सिखाते हैं। उनका निर्माण इस लिए किया गया है ताकि पाठक पात्रों के शब्दों, कार्यों और व्यवहारों से अपने लिए सबकों को, उनसे सिखने के द्वारा अपने लिए इसे अपनाते हुए जो कि परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और उनसे दूर रहते हुए जो कि परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हैं।

इसके बारे में इस तरह से सोचें। अधिकत्तर अंशों में, प्रेरितों के काम में दी हुई कहानियाँ मात्र कहे हुए तथ्यों के रूप में प्रगट होती हैं। ऐसा हुआ, वैसा हुआ, फिर कुछ और घटित हो गया। सतही तौर पर, यह घटनाओं का एक विवरण देने जैसा प्रदर्शित होता है। जैसा कि हमने पहले देखा है, कभी कभी लूका ने उसकी कहानियों के तत्वों के महत्व पर स्पष्ट रूप से टिप्पणी की है। परन्तु अधिकत्तर अंशों पर, उसने घटनाओं या तथ्यों के विवरण के ऊपर कोई टिप्पणी नही की है। परन्तु फिर भी, वास्तविकता तो यह है कि उसकी कहानियाँ मात्र घटनाओं का विवरण देने के लिए ही नहीं लिखी गई हैं। उसके पास में धर्म शिक्षा देने का भी उद्देश्य था, और उसने इन कहानियों को उपयोग इन संवादों को अस्पष्ट तौर पर संप्रेषित करने के लिए उपयोग किया।

मैं इस विचार को प्रस्तुत करने के लिए अपने जीवन से एक कहानी का उदाहरण देता हूँ। जब मेरी बेटी बहुत छोटी थी, तो उसे कहा गया था कि वह रात्रि भोजन के बाद चॉकलेट नहीं खाएगी। परन्तु एक सांयकाल वह उसके होठों में चॉकलेट को दबाए हुए मेज पर आ गई। मैंने उससे पूछा कि क्या उसने चॉकलेट खाई थी और उसने बड़ी आँखें निकालते हुए इन्कार करते हुए उत्तर दिया कि: "मैंने कोई चॉकलेट नहीं खाई, पिता जी।"

पिता होने के नाते, मेरे पास इस तरह की परिस्थिति से निपटने के लिए दो तरह के तरीके थे। मैं इस विषय पर सीधे और स्पष्ट तरीके से तार्किक बहस वाले संवाद के साथ बात कर सकता था। मै उसे ऐसा कह सकता था कि, "तुम मुझसे सच नहीं कह रही हो। मैं तुम्हारे मुँह में चॉकलेट को देख सकता हूँ! तुम अब परेशानी में हो।" परन्तु मेरे पास कहानी वाले संवाद का विकल्प भी था, वह जो ज्यादा अप्रत्यक्ष और अस्पष्ट तरीका था। मै अपनी छोटी बेटी को अपनी गोदी में उठा लेता हूँ और उससे कहता कि, "मैं तुम्हें एक कहानी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सुनाना चाहता हूँ। एक बार की बात है कि, एक छोटी लड़की थी जिसे कहा गया थी कि वह अपनी सबसे उत्तम पोशाक में न खेले। परन्तु वह फिर भी अपनी सबसे उत्तम पोशाक में खेलती है और बहुत ज्यादा गन्दी हो जाती है। तुम उस छोटी लड़की के व्यवहार के बारे में क्या सोचती हो?"

इस जैसी एक कहानी वाले संवाद की आलंकारिक रणनीति मौलिक रूप से अस्पष्ट स्तर पर कार्य करती है। यह बच्चे को आश्चर्यचकित होने के लिए निमन्त्रण देती है, "क्या यह उस छोटी लड़की के लिए बुरा नहीं था क्योंकि उसने आज्ञापालन नहीं किया?" कहानी की सुन्दरता और सामर्थ्य यह है कि यह इस तरह के संवादों को अस्पष्ट तरीके से संप्रेषित करते हैं। यदि यह चतुराई से भरे हुए हैं, तो यह कहानी में सुनने वाले को कहानी की परिस्थितियों में सम्मिलित करते हैं। वह व्यक्तिगत् तौर पर इसमें सम्मिलित इस तरीके से हो जाता है कि सुनने वाला अपने आप का बचाव करने में कोई सहायता नहीं पाता है। यह सुनने वाले को ज्यादा शिक्षा लेने की अनुमति देता है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के 70% साहित्य को कहानी के रूप में प्रगट किया गया है। पुस्तक के बहुमत साहित्य के लिए आवश्यक तौर पर इसके पाठकों को कह रहा था कि, "मैं तुम्हें आरम्भ की कलीसिया में परमेश्वर के कार्य के लिए एक कहानी बताना चाहता हूँ।" इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जिस कहानी को उसने बताया वह निश्चित ही सच्ची थी। उसने उन्हें तथ्यात्मक इतिहास के संसार में प्रवेश करने के लिए आमन्त्रित किया। परन्तु इसने इस इतिहास को एक कहानी के ढाँचे में प्रस्तुत किया क्योंकि वह चाहता था कि उसके पाठक वर्णन किए हुए तथ्यों से सारांशों को प्राप्त कर लें। इस लिए, जैसा कि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमारे लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम इसकी अस्पष्ट शिक्षाओं की खोज करें।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, मूल्यांकन और हमारे जीवन में बाइबल की किसी भी कहानी को लागू करने के लिए मुख्य तरीकों में से एक यह देखना है कि कैसे परमेश्वर उन व्यवहारों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देता है जो कि घटित हो रही हैं। इन सभों से भी ऊपर, उसके शब्द और कार्य बिल्कुल ही अचूक हैं। परिणामस्वरूप, हमें सदैव परमेश्वर की उन बातों पर ध्यान देना चाहिए कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में परमेश्वर क्या स्वीकार करता है और किसे आशीष देता है, इसी के साथ उन बातों को जिन्हें वह अस्वीकार करता या श्राप देता है। जिसे भी परमेश्वर आशीषित करता है वह अच्छा होना चाहिए, और जिसे भी वह अस्वीकार करता या श्रापित करता है उसे बुरा ही होना चाहिए। जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं तो हमें उन विश्वासों, आचरणों और व्यवहारों का अनुकरण करने की चेष्टा करनी चाहिए जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और उनसे बचना चाहिए जो उसका विरोध करती हैं।

इसके अलावा, क्योंकि लूका आरम्भ की कलीसिया के मुख्य अगुवों के दृष्टिकोणों के ऊपर बहुत ज्यादा निर्भर रहा, लूका की अस्पष्ट शिक्षा को देखने का एक और विश्वसनीय तरीका हमारे लिए यह है कि हम लूका के द्वारा प्रदान किए गए उदाहरणों का अवलोकन करें। जब विश्वासयोग्य लोग जैसे कि प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और कलीसिया के अन्य सम्मानित अगुवे ने कुछ किया या कुछ कहा, तो हम सामान्य तौर पर यह अनुमान निकालते हैं कि हमें इनके प्रति सहानुभूति रखने के लिए बुलाहट दी गई है। उनके कार्य उपयुक्त थे, और उनकी गवाह सच्ची थी। परिणामस्वरूप, इस बुलाहट के लिए हमारे हृदयों में प्रतिक्रिया होनी चाहिए, और हमारे अपने व्यवहार और विचार उनके नमूने का अनुकरण करने चाहिए।

और इसके उलटा भी सत्य है। जब प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों या कलीसिया के द्वारा पात्रों की निन्दा हो रही है, तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि उनके कार्य बुरे थे, और यह कि हमें उनके नमूने का अनुसरण नहीं करना चाहिए। अब, इसका अर्थ यह नहीं है कि यही प्रेरितों के काम में निहितार्थ श्रेणी है जिसे लूका ने लिखा है। परन्तु वे आधुनिक पाठकों को अपेक्षाकृत बाइबल की कहानियों से कैसे उचित अनुमानों को प्राप्त करते हुए शिक्षा प्राप्त करने के लिए ठोस तौर पर पैर जमाने के लिए जमीन को प्रदान करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रेरितों के काम के साहित्यिक चरित्र की इस समझ को अपने ध्यान में रखते हुए, हमें अब पहली शताब्दी और आधुनिक संसार के बीच की असंगतियों की ओर मुड़ना चाहिए जो कि जिस तरीके से हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को स्वयं पर लागू करते हैं को प्रभावित करती हैं।

असंगतियाँ

हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि यद्यपि बाइबल को हमारे लिए लिखा गया, तौभी यह सीधे हमारे लिए नहीं लिखी गई थी। हम स्पष्ट तौर पर यह जानते हैं कि इसके वास्तविक प्राप्तकर्ता थियुफिलुस और पहली शताब्दी के लोग थे। इस कारण, कुछ अर्थो में, हम उनके कंधों के ऊपर से पढ़ रहे होते हैं जब हम लूका की पुस्तक को पढ़ते हैं। हम इतना ज्यादा नहीं सुन रहे हैं जिसे लूका हमें कह रहा है मानों कि हम संयोग से ही सुन रहे हैं जो कुछ वह उनसे कह रहा था। इस लिए, हमें यह आशा करनी चाहिए कि प्रेरितों के काम में वह कम से कम कुछ शिक्षाओं को हम पर भिन्न तरह से लागू करता है इसकी बजाए कि वह थियुफिलुस और लूका के वास्तविक पाठकों पर लागू करता है। यदि हम केवल, भिन्नता पर ध्यान न देते हुए वह दोहराएँ जिसे हम पवित्रशास्त्र में देखते हैं, तो हम नियमित तरीके से परमेश्वर के वचन को नुकसान भरे तरीके से अनुचित लागू करते हैं।

हम इन अंसगतियों को जो हमारे और लूका के संसार में थी दो तरीकों से सारांशित करेंगे। सबसे पहले, हम उनकी तुलना में भिन्न समय में रहते हैं। और दूसरा, इस संसार में पहली शताब्दी से लेकर अब तक बहुत कुछ बदल गया है, इसी कारण हमारे पास विभिन्न परिस्थितियाँ, विभिन्न स्थितियाँ उसकी तुलना में हैं जिसमें लूका ने इस पुस्तक को सबसे पहले लिखा। हम इस तथ्य के ऊपर देखेंगे कि हम उन लोगों कि तुलना में भिन्न समय में रहते हैं जिन्होंने प्रेरितों के काम की पुस्तक को सबसे पहले प्राप्त किया था।

विभिन्न समय

उदाहरण के लिए, यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम यह स्मरण रखें कि प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रेरितों के ऊपर केन्द्रित है, जो कि पहली शताब्दी में वही मसीह के लिए अधिकारिक गवाह थे। परमेश्वर की बहुत सी गतिविधियाँ प्रेरितों के माध्यम से छुटकारे के इतिहास में उस समय और स्थान में विशेष तौर पर पूरी की गई; वे मूलभूत और मौलिक उपलब्धियाँ थी जिन्हें पुन: नहीं दोहराया जा सकता है। बस केवल एक उदाहरण के रूप में, प्रेरितों का मात्र अस्तित्व ही अद्वितीय था। जैसा कि हम बाद में इस अध्याय में देखेंगे, इसके बाद कभी भी प्रेरित नहीं हो सकते हैं। क्योंकि प्रेरितों के पद के लिए एक योग्यता, यह है कि वह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसने पुनरूत्थित प्रभु को देखा हो। अन्यों के लिए, इसे सीधे ही प्रेरित के पद पर परमेश्वर स्वयं की ओर से नियुक्त किया गया हो। इस लिए, जबकि यह कहना तर्कसंगत होगा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें हमारे अपने कलीसियाई अगुवों के प्रति सम्मान और अधीन होने के लिए कहती है, हमारे पास जीवित प्रेरित आज के दिनों में नहीं हैं। जो सबसे उत्तम बात हम कर सकते हैं वह यह है कि हम नए नियम में उनकी लिखी हुई गवाही के प्रति अधीन हो सकते हैं।

दुर्भाग्य से, बहुत सारे मसीही विश्वासी समूहों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को मसीही जीवन के लिए एक नमूने के तौर पर देखा है जिसे प्रत्येक युग में जैसे का तैसे पालन किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 2:1-4 हमें शिक्षा देता है कि पवित्र आत्मा को नाटकीय, आश्चर्यचकित ढँग से पिन्तेकुस्त के दिन उण्डेल दिया गया, और जिन्होंने उन्हें प्राप्त किया वे भिन्न भाषाओं और बोलियों में सुसमाचार की घोषणा करने लगे। यह एक विशेष घटना थी जो कि आत्मा का उण्डेला जाना आरम्भ में घटित हुई थी ताकि यह प्रेरितों और अन्य आरम्भिक विश्वासियों को मसीह की सेवा के लिए सामर्थी बना दे। इसी तरह की घटनाएँ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रेरितों के काम में अक्सर घटित हुई हैं, परन्तु केवल प्रेरितों की गतिविधियों के प्रत्यक्ष परिणाम में। जो बात प्रेरितों के काम की पुस्तक में निरन्तर चलती रहती है वह यह तथ्य है कि प्रत्येक विश्वासी पवित्र आत्मा को प्राप्त करता है ताकि वह उसके चरित्र में परिवर्तित हो जाए और इसका एक गवाह बन जाए। जो बात प्रेरितों के काम की पुस्तक में स्थिर नहीं है वह पवित्र आत्मा की विशेष अभिव्यक्तियों की उपस्थिति या उसका अभाव है। परन्तु तिस पर भी, कलीसिया की कुछ शाखाऐं इस बात पर जोर देती हैं कि यहाँ तक आज के समय में भी एक अलग तरह से पवित्र आत्मा से भरना होता है जो कि सदैव सुसमाचार की घोषणा के साथ अभिव्यक्त अन्य भाषाओं या बोलियों में प्रगट होना चाहिए। जब सही-अर्थों वाले मसीही विश्वासी पहली शताब्दी और आज के दिनों में इन असंगतियों को घ्यान में रखने में असफल हो जाते हैं, वे तो अक्सर अनुचित तरीकों से प्रेरितों के काम की शिक्षाओं को लागू करने का प्रयास करते हैं।

विभिन्न परिस्थितियाँ

और प्रेरितों के काम के मूल पाठकों की तुलना में विभिन्न समयों में रहने के अलावा, हमारे पास विभिन्न परिस्थितियाँ भी हैं, जैसा कि भिन्न संस्कृतियों और व्यक्तिगत स्थितियों का होना। प्रेरितों के काम की पुस्तक में सारी घटनाएँ पहली शताब्दी की ऐतिहासिक परिस्थितियों में घटित हुई, लूका के लेखन के कई पहलू इन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिवर्तनों पर आधारित हैं।

दुर्भाग्य से, प्रेरितों के काम की शिक्षाओं को सच करने के लिए किए एक प्रयास में, शताब्दियों से कई मसीही विश्वासी समूह पहली शताब्दी की कलीसिया की सांस्कृतिक प्रथाओं पर लौटने की कोशिश कर रहे है। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 5:42 में हम पढ़ते हैं कि कलीसिया व्यक्तिगत घरों में आराधना के लिए एकत्र होती थी। इसी आधार पर आज की कुछ मसीही विश्वासी कलीसियायें घरों में आराधना के लिए एकत्र होती हैं और गिर्जाघरों में एकत्र नहीं होती हैं। और प्रेरितों के काम 6:1 में, हम पाते हैं कि यरूशलेम की कलीसिया विधवाओं के लिए भोजन का प्रबन्ध किया करती थी। परिणामस्वरूप, कुछ मसीह विश्वासी कलीसियायें आज यह हठ करती हैं कि प्रत्येक कलीसिया में उनकी सेवकाई के एक खण्ड में विधवाओं के लिए एक खाद्य सेवा होना चाहिए। अब इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आज के समय घरों में आराधना के लिए एकत्र होना या विधवाओं के लिए भोजन की सेवा में स्वाभाविक तौर पर कुछ भी गलत नहीं है। परन्तु हमें इन प्रथाओं को पहली-शताब्दी की कलीसिया की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए स्वीकार करना चाहिए। उदाहरण के लिए, सताव ने उन्हें घरों में आराधना के लिए एकत्र होने के लिए मजबूर कर दिया। परन्तु संसार के कई भागों में जहाँ थोड़ा या कुछ भी सताव नहीं है, कलीसिया को घरों में आराधना के लिए एकत्र होने की कोई अवश्यकता नहीं है। जहाँ तक हमारी परिस्थितियाँ उनसे मेल खाती हैं, तो हमारे लिए बाइबल के ये सिद्धान्त वैधानिक तौर पर लागू किए जा सकते हैं। परन्तु जहाँ तक यह उनसे भिन्न हैं, हमें बाइबल के इन धर्मसिद्धान्तों को भिन्न तरीकों से लागू करने के लिए बाध्य हैं।

सच्चाई तो यह है कि, हम अक्सर प्रेरितों के काम की पुस्तक में यहाँ तक कि एक ही सिद्धान्त को भिन्न तरह से लागू किए जाने के बारे में पाते हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 2:44-45 में, लूका ने यरूशलेम की कलीसिया के सदस्यों के बारे में यह विवरण दिया है कि वे उनके संसाधनों को साझा उपयोग करते थे। परन्तु तौभी, प्रेरितों के काम की पुस्तक के मध्य में ही हम पाते हैं कि पौलुस प्रेरित के द्वारा स्थापित कई कलीसियायें धनी नागरिकों या शहर के अगुवों के द्वारा मिलकर घरों में एकत्रित होती थीं, जिसमें किसी तरह की कोई सांप्रदायिकता नहीं थी, और न ही उनके व्यवहारों में किसी तरह की कोई आलोचना थी। आरम्भ से ही, कलीसिया ने यह स्वीकार कर लिया था कि बाइबल के उन्हीं धर्म सिद्धान्तों को उस तरह से लागू किया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जाना चाहिए जो कि वर्तमान की परिस्थितियों पर सही तरीके से लागू होते हों। हमें केवल नकल मात्र के लिए दायित्वपूर्ण सबक के लिए एक विकल्प के तौर पर समझौता नहीं करना चाहिए।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के साहित्यिक चरित्र, और लूका के दिनों और हमारे दिनों में असंगितयों की विस्तृत रूपरेखा का वर्णन कर लेने के बाद, हमें पहली शताब्दी और आधुनिक संसार के बीच की कुछ विशेष निरन्तरताओं की ओर ध्यान करना चाहिए।

निरन्तरता

हम दोनों समय को विश्वासियों के बीच की निरन्तरताओं को यह कहते हुए सारांशित कर सकते हैं कि हमारे पास एक ही त्रिएक परमेश्वर है, जो कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में विद्यमान है; एक ही उद्देश्य है, जो कि मसीह में परमेश्वर के राज्य का निर्माण करना है; और एक ही सुसमाचार, मुक्ति और छुटकारे का सन्देश है, जो हमसे यह चाहता है कि हम विश्वास, पश्चाताप और आज्ञाकारिता में प्रतिउत्तर दें। आइए सबसे पहले हम इस तथ्य की ओर देखें कि हमारे पास एक ही परमेश्वर है जैसा कि पहली शताब्दी के मसीह विश्वासियों के पास था।

एक ही परमेश्वर

लूका का मुक्ति के इतिहास के बारे में विवरण हमें स्मरण दिलाता है कि हम उस ही प्रभु यीशु मसीह की सेवा करते और गवाही देते हैं जिसकी प्रेरितों और आरम्भ की कलीसिया ने की। प्रत्येक मसीही विश्वासी को उसी ही पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ्य दी गई जो कि पहली शताब्दी में उपस्थित था। और हम उसी ही पिता का आदर और उसकी महिमा करते हैं। हमारा त्रिएक परमेश्वर परिवर्तित नहीं हुआ है।

परमेश्वर ने पहली शताब्दी में वैभवशाली तरीके से सुसमाचार के माध्यम से कार्य किया और वह आज के दिनों में भी ऐसा ही करता है। यदि ऐसे जान पड़ता हो कि परमेश्वर हमारे व्यक्तिगत जीवन से, या हमारी कलीसिया या संप्रदाय के जीवन से दूर है, तो बातें जैसी होनी चाहिए नही हो रही हैं। यदि हम परमेश्वर को कार्य करते हुए नहीं देख रहे हैं, जो कि खोए हुए को मुक्ति ला रहा है और उसकी कलीसिया का निर्माण कर रहा है, तब हमें पश्चाताप और विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर मुड़ते हुए उससे कहना चाहिए कि वह उसकी महिमा से भरे हुए मुक्ति के इतिहास के कार्य को हमारे जीवनों और कलीसिया में निरन्तर जारी रखे।

एक ही परमेश्वर के होने के अलावा, मसीही विश्वासियों के पास आज एक ही उद्देश्य है जो कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसिया में पाया जाता है।

एक ही उद्देश्य

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, परमेश्वर का उद्देश्य मसीह के राज्य को प्रेरितों के द्वारा निर्माण करने का था। वे इस उद्देश्य की ओर कलीसिया का पालन पोषण करते हुए और कलीसिया के आकार में सुसमाचार के द्वारा वृद्धि करते हुए कार्य करते रहे। परन्तु वो यह भी जानते थे कि परमेश्वर के राज्य का विस्तार करके इसे पूरी पृथ्वी में भर देने के लिए वर्णित लोगों से ज्यादा कुछ वर्षों के लिए कार्य करना चाहिए, इस लिए उन्होंने कलीसिया को उनके साथ कार्य करने के लिए और उनकी मृत्यु के बाद इसे जारी रखने के लिए तैयार किया। हम ऐसा कह सकते हैं कि जैसे यीशु ने अपने राज्य के निर्माण के कार्य को प्रेरितों को सौंपा था, वैसे ही प्रेरितों ने इस कार्य को कलीसिया को सौंपा दिया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, राज्य के निर्माण का यह लक्ष्य उस समय तक खत्म नहीं होगा जब तक मसीह अपनी महिमा में पुन: वापस नहीं आ जाता। इस लिए, आधुनिक कलीसिया का लक्ष्य अभी भी यह पुष्टि करना है कि मसीह में उसके राज्य का निर्माण परमेश्वर का मिशन है, जिसमें पूरे संसार को और सभी जीवनों को उसके स्वामित्व की अधीनता में आ जाना चाहिए। और इसके लिए हम एक मौलिक तरीके का उपयोग करते हैं जो कि प्रेरितों की मुक्ति, नैतिकता, परमेश्वर का चरित्र, सम्बन्धों, सुसमाचार प्रचार और जीवन के प्रत्येक विषयों के ऊपर दी गई शिक्षा के ऊपर आधारित होना चाहिए है। अत: यदि हम मसीह का सम्मान और उसकी आज्ञा का पालन करना चाहें, तो हमें उसके प्रेरितों के प्रति जो कि उसके अधिकारिक गवाह हैं, अधीन होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, लूका ने सावधानी से उन विभिन्न तरीकों का विवरण दिया है जिसमें प्रेरितों ने भिन्न संस्कृतियों और परिस्थितियों में उसके राज्य का विस्तार किया। और उनके नमूने का अनुकरण करते हुए, हम हमारे आज के दिनों में राज्य के लक्ष्य को उन्हीं तरीकों को उपयोग करते हुए आगे बढ़ा सकते हैं। ठीक है, हमें आधुनिक और प्राचीन संसार के बीच की असगंतियों के प्रकाश में समायोजन करने की आवश्यकता है। परन्तु क्योंकि हम स्वयं की कार्यसूची आगे बढ़ाने की बजाय परमेश्वर के घोषित मिशन को आगे बढ़ाते हैं, इसलिए इनके पीछे दिए हुए लक्ष्य और सिद्धान्तों प्रत्येक पीढ़ी में एक जैसे ही रहते हैं।

अन्त में, एक ही परमेश्वर और एक ही उद्देश्य के साथ, आधुनिक मसीही विश्वासियों को पहली शताब्दी की आरम्भ की कलीसिया की तरह एक ही सुसमाचार को प्रचार करने के लिए बुलाहट दी गई है।

एक ही सुसमाचार

यह बात कोई अर्थ नहीं रखती है कि संसार कितना ज्यादा क्यों न परिवर्तित हो जाए, एक बात सदैव बनी रहती है: वह है मानवीय प्राणी जो परमेश्वर के विरुद्ध पाप से भरे हुए पतित हैं और उससे दूर हैं, उन्हें छुटकारे की सख्त आवश्यकता है। हम सभों को एक ही मुक्ति की आवश्यकता है। और यह मुक्ति मसीह में उपलब्ध है, जब वह हमारे पापों को क्षमा करता और हमें उसके राज्य में ले आता है। यही प्रेरितों का सुसमाचार है जिसकी उन्होंने पहली शताब्दी में हमें शिक्षा दी। यही वह सन्देश जिसको लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में घोषित किया। और यही वह सुसमाचार है जिसे हमें अपनाना चाहिए और आज के दिनों में इसके अधीन होना चाहिए।

और यह सन्देश साधारण है। जैसा कि पौलुस और सीलास ने फिलिप्पियों के दरोगा से प्रेरितों के काम 16:31 में कहा था कि:

> प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, और तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा (प्रेरितों के काम 16:31)।

इस सरल संदेश का गहरा प्रभाव पड़ा। यह हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक जीवनों के प्रत्येक पहलुओं को, चुनौती देते हुए परिवर्तित करता है, ताकि हम इस संसार में उसके सुसमाचार के गवाह बन जाएँ।

यही सुसमाचार सभी स्थानों और सभी समयों में सभी लोगों के लिए एक ही जैसा रहा है। सभी लोगों को मसीह में भरोसा करने और उनके पाप से भरे हुए विद्रोह से पश्चाताप करने के लिए बुलाहट दी गई है। सभी लोगों को उसके स्वामित्व के अधीन होने के लिए और इसके राज्य के निर्माण ले लिए बुलाया गया है। यह बुलाहट हमारे दिनों में प्रत्येक व्यक्ति के पास जानी चाहिए, बिल्कुल वैसे ही जैसे यह प्रेरितों के दिनों में पूरे संसार में घोषित की गई थी। यहूदी और अन्य जातियों, धनी और गरीब, पुरूष और स्त्री, सम्मानित और त्यागे हुए के लिए यह आज्ञाकारिता का आह्वान् है। यह सभी तरह के अवरोधों और रूकावटों पर विजय को पाती

है, क्योंकि यह राज्य करने वाले मसीह के शब्द हैं, जिन्हें पवित्र आत्मा से सशक्त किया गया है, ताकि उसके पिता की महिमा हो। जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें शिक्षा देती है, कोई भी जाँच, कोई भी तनाव, कोई भी विरोध, छुटकारे के विस्तार और विकास के विरोध में पर्याप्त रूप से शक्तिशाली नहीं है। इसी लिए आधुनिक विश्वासियों को प्रेरितों के सुसमाचार की पुष्टि करने और घोषित करने के लिए प्रत्येक को मसीह में विश्वास करने और उसकी आज्ञा पालन करने के लिए और उन्हें परमेश्वर के राज्य में निष्ठावान् नागरिक के रूप में सम्मिलित करने के लिए प्रमाणिक और साहसी होना चाहिए।

सारांश

इस अध्याय में हमने प्रेरितों के काम में लूका के द्वारा उपयोग की गई आलंकारिक रणनीतियों को, उसके लेखन कार्य की विषय सूची को देखा, और उसकी शिक्षाओं के आधुनिक उपयोगों की ओर पहले कदमों को उठाया है। इन विषयों पर हमारी खोज हमें एक समझ, सराहना, और हमारे अपने दिनों में हमें आधिकारिक शिक्षाओं से जीने के लिए एक मार्ग को प्रदान करनी चाहिए।

कई तरीकों से, प्रेरितों के काम की पुस्तक मसीह के समय और आधुनिक कलीसिया के समय के बीच एक द्वार के रूप में कार्य करती है। यह हमें मसीह के व्यक्तित्व, कार्य और शिक्षाओं का विवरण जैसा आरम्भ की कलीसिया ने समझा और लागू किया के बारे में देती है, और यह आधुनिक विश्वासियों के लिए उन तरीकों को समझने की नींव को डालती है जिसमें वे उनके जीवनों में उन्हीं विचारों को लागू कर सकें। इसलिए जितना ज्यादा हम प्रेरितों के काम में लूका के उद्देश्यों और तरीकों को पहचानने में सक्षम होंगे उतना ज्यादा हम उन तरीकों में जीवन यापन करने के लिए सुसज्जित होंगे जो हमारे पुनरूत्थित राजा को सम्मान और सेवा देगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।